जुलाई 2022
₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

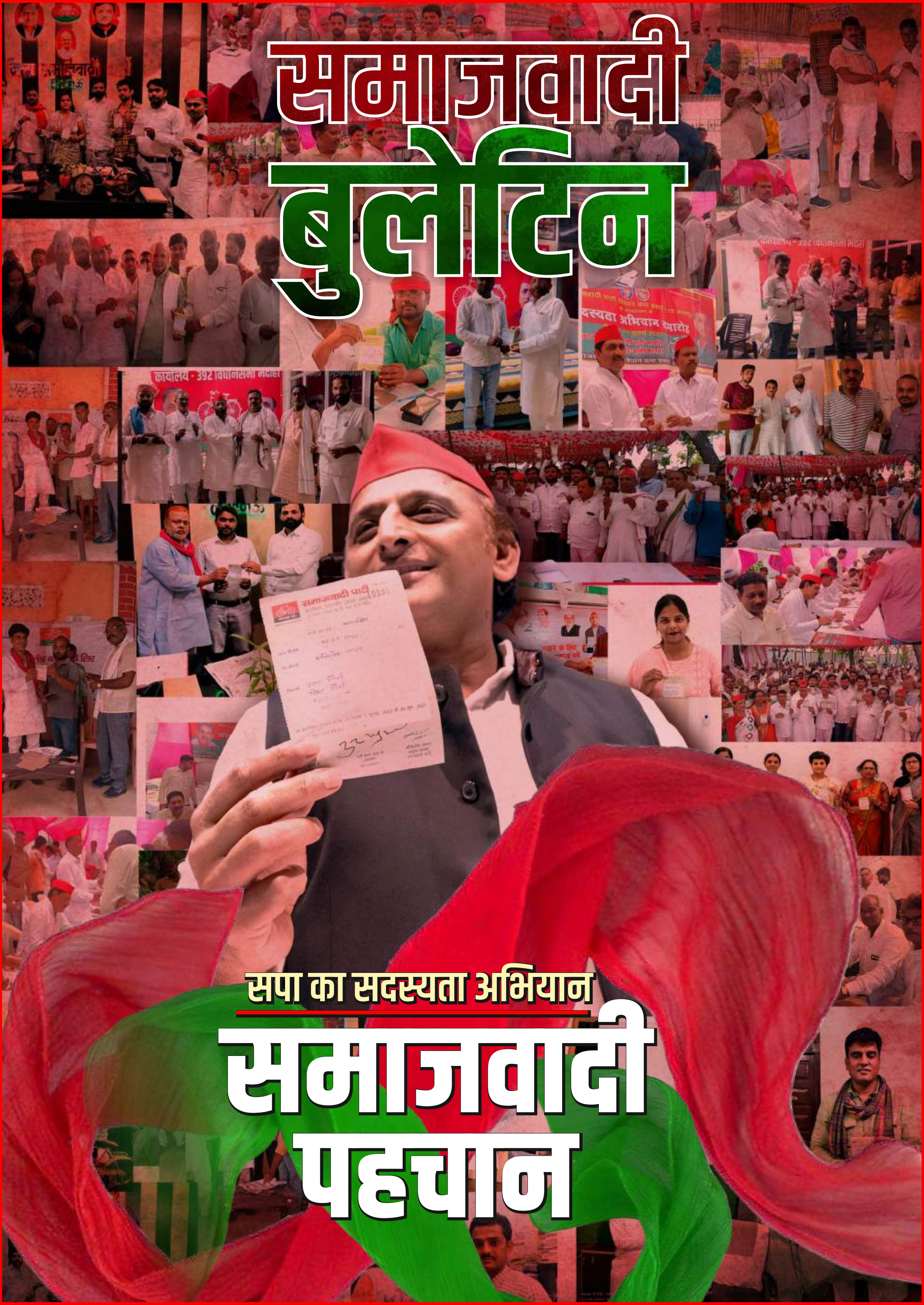

सपा का सदस्यता अभियान

समाजवादी पहचान

R.N.I. No. 68832/97

समाजवादी पार्टी के सदस्यता अभियान को सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को मिलकर सफल बनाना है। युवाओं और महिलाओं को बड़ी संख्या में पार्टी से जोड़ें। समाजवादी पार्टी ही सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ सकती है और सभी को अधिकार दिला सकती है। दुनिया के जितने दुख-दर्द हैं वे समाजवादी व्यवस्था से ही दूर हो सकते हैं, दूसरा और कोई रास्ता नहीं है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

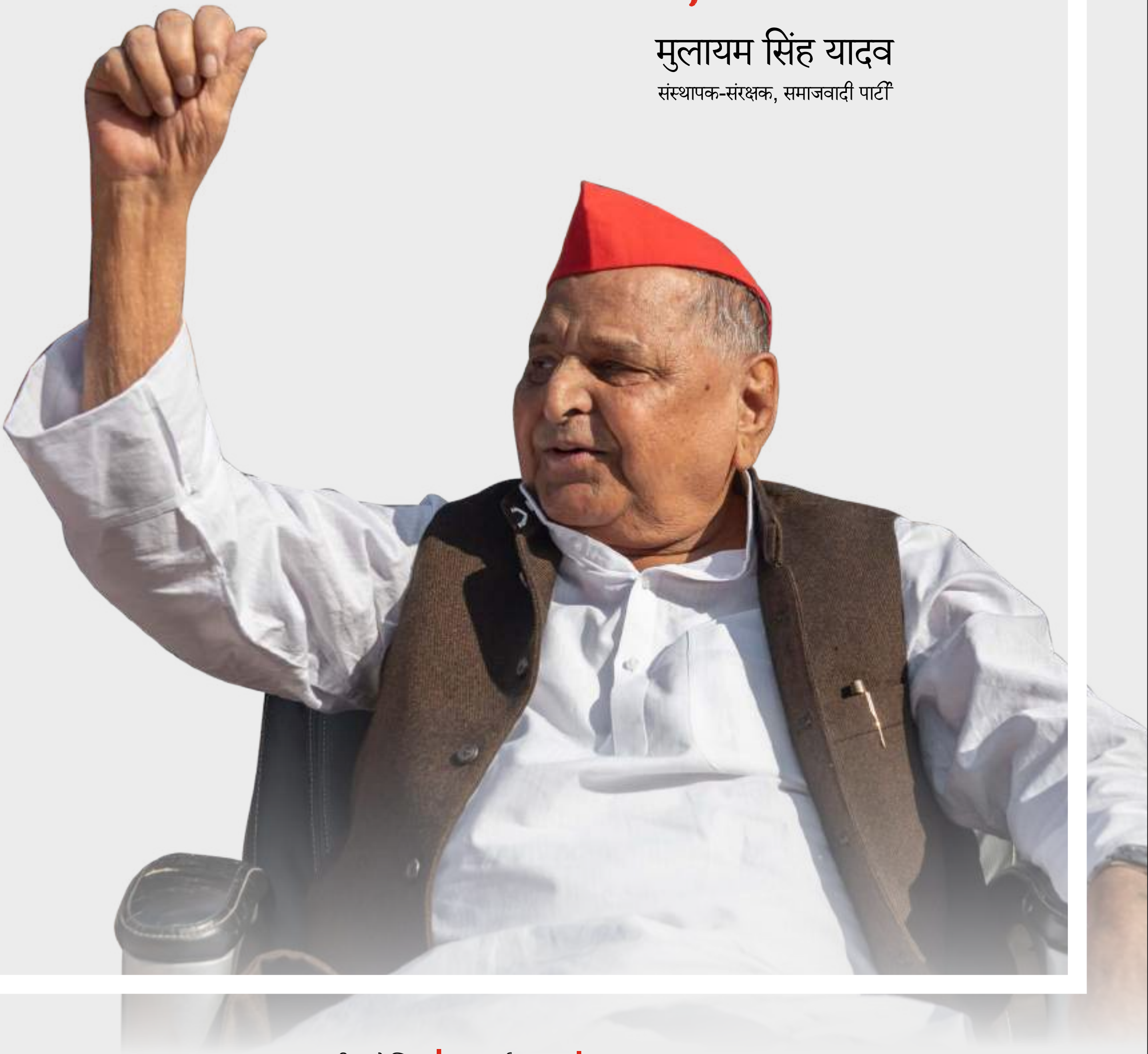

समाजवादी बुलेटिन

जुलाई 2022

वर्ष 23 | संख्या 09

प्रिय पाठकों,

आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन बदले हुए कलेवर में अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आपके उत्साहवर्धन और प्रेम के कारण ही हमारा यह सफर यहां तक पहुंचा है। हम भरोसा दिलाते हैं कि हम आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं आने देंगे। कृपया हमेशा की तरह आगे भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

धन्यवाद!

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

RNI No 68832/97

अंदर

यूपी में स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल 46

12 कवर स्टोरी

समाजवादी पहचान

हवा-हवाई एक्सप्रेस-वे 08

भाजपा सरकार और उसके मंत्री जिस बुन्देलखंड एक्सप्रेस-वे पर इतरा रहे थे और इसे बड़ी उपलब्धि बता रहे थे वह जनता के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। 15 हजार करोड़ की लागत से बना ये एक्सप्रेस-वे 15 दिन भी नहीं चल पाया और रोजाना जगह-जगह धंसता जा रहा है।

कुशासन और भ्रष्टाचार के 100 दिन 04

मेधा का सम्मान 32

यूपी में भाजपा राज

Hindi News / भारत / उत्तर प्रदेश

'दलित होने के कारण नहीं मिलता सम्मान', योगी सरकार के मंत्री दिनेश खटीक का इस्तीफा

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को अपने इस्तीफे की पेशकश करने वाले जलशक्ति विभाग के राज्यमंत्री दिनेश खटीक ने आरोप लगाया है कि दलित होने की वजह से विभाग में उनकी सुनवाई नहीं होती.

Hindi News / भारत / उत्तर प्रदेश

यूपी का तबादला कांड: नाराजगी के बीच इस्तीफों की अटकलें, जानिए क्यों चर्चा में हैं योगी के 3 मं...

उत्तर प्रदेश की सियासत में सरका... में हुए तबादलों को लेकर बवाल मच गया है, जिसके चलते योगी... केंद्र में आ गए हैं. डिप्टी सीएम ... और ... जितिन प्रसाद नाराज बताए जा रहे हैं तो वहीं, दिनेश खटी...

बीते आठ सालों में सरकारी नौकरियों के लिए 22 करोड़ आवेदन, 7.22 लाख को नौकरी मिली

साझा करें:

Share 127 Tweet Print More

केंद्र सरकार द्वारा लोकसभा में पेश आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2014-15 से 2021-22 के बीच उसके विभागों को नौकरियों के लिए 22.05 करोड़ आवेदन प्राप्त हुए, लेकिन नौकरी एक फीसदी से भी कम (0.33) उम्मीदवारों को मिली. वहीं, वर्ष 2019-20 को छोड़ दें तो केंद्र द्वारा दी जाने वाली नौकरियों में 2014-15 के बाद से साल दर साल गिरावट देखी गई है.

कुशासन और भ्रष्टाचार के

100 दिन

Hindi News · Uttar Pradesh · Luck... Minister Dinesh Khatik Raised Questions By Making Alle...

नमामि गंगे में भ्रष्टाचार: इस बार तो भाजपा के ही मंत्री ने खड़े किए सवाल, पहले भी लगे आरोप

अमर उजाला नेटवर्क, लखनऊ Published by: शाहरुख खान Updated Thu, 21 Jul 2022 08:03 AM IST

सार

नमामि गंगे योजना में भ्रष्टाचार का आरोप इस बार जल शक्ति राज्यमंत्री दिनेश खटीक ने लगाया है। योजना में गड़बड़झाले के पहले भी गंभीर आरोप लगे हैं। 24 मई को सपा विधायक रविदास मेहरोत्रा ने विधानसभा के प्रश्न प्रहर में पूछा कि 2017 से 2022 के बीच नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति में कितनी राशि का व्यय किया गया? उन्होंने आरोप लगाया कि इस योजना में 17411 करोड़ रुपये का घोटाला किया गया है।

Hindi News / Metro / Lucknow / Politics / Up Fight Between Ministers And Officers Came To Surface Know

UP Politics: यूपी में सतह पर आई मंत्रियों और अफसरों की लड़ाई... PWD, हेल्थ, सिंचाई के बाद अब किसकी बारी

Reported by प्रेम शंकर मिश्रा | नवभारत टाइम्स Updated: 21 Jul 2022, 9:39 am

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री ने भाजपा सरकार के 100 दिन पूरे होने के मौके पर तथाकथित उपलब्धियों को लेकर जो लंबी-लंबी डींगे हांकी उनकी कलई खुद उनके मंत्रियों ने ही खोल कर रख दी है। मंत्री खुले आम अपनी ही सरकार में भारी भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं। तबादलों में भ्रष्टाचार का अलग ही उद्योग चल रहा। इससे साफ हो गया है कि सरकार के शुरुआती 100 दिन कुशासन और भ्रष्टाचार के प्रतीक हैं। यूपी की जनता के लिए भाजपा सरकार का एक-एक दिन भारी पड़ रहा।

इस सरकार में नीचे से लेकर ऊपर तक, नख से लेकर शिखर तक भ्रष्टाचार में भाजपाई नेता, मंत्री, अधिकारी डूबे हुए हैं और घूस के रेट हर विभाग-कार्यालय में निश्चित हैं। हर फाइल में भ्रष्टाचार शामिल है। यही भाजपा का रामराज है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश सरकार में हाल ही में विभिन्न विभागों में ट्रांसफर पोस्टिंग और नमामि गंगे योजना में हुए भ्रष्टाचार की जांच सीबीआई से होनी चाहिए।

भाजपा सरकार में सभी विभागों में ट्रांसफर पोस्टिंग का खेल खेला जा रहा है। जनता इस खेल में पिस रही है। जांच की आंच में बड़े-बड़े नाम आ रहे हैं। नमामि गंगे योजना में करोड़ों रूपये खर्च हो चुके हैं लेकिन गंगा अविरल, निर्मल नहीं हुई। यमुना स्वच्छ नहीं हुई। जितना भ्रष्टाचार भाजपा राज में हो रहा है उतना तो पहले कभी किसी सरकार में नहीं हुआ। उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार के सौ दिनों में सत्ता के दुरुपयोग से लोकतंत्र और कमजोर हुआ है। भाजपा सरकार के सौ दिन में मुख्यमंत्री ने जिन उपलब्धियों को बताया है, वे सब झूठ का पुलिंदा और भाजपा की फरेबी राजनीति का हिस्सा है।

'जीरो टालरेंस' का दावा करने वाली भाजपा सरकार की पोल खुल गई है। मंत्रियों-अधिकारियों के बीच बंदर-बांट के लिए खींचतान चल रही है और परस्पर आरोप-प्रत्यारोप भी लगाए जा रहे हैं। सरकार के मंत्री, अधिकारी मिलकर जनता को लूट रहे हैं। सरकारी विभागों में तबादलों और नियुक्तियों में बड़े पैमाने पर लूट मची हैं। सरकार के भ्रष्टाचार की चर्चा हर जबान पर है।

लोक निर्माण विभाग, स्वास्थ्य विभाग और जल शक्ति विभाग सहित अन्य विभागों में भी तबादलों का धंधा

फोटो स्रोत : गूगल

भाजपा में एक बड़ा उद्योग बन गया है। जांच की आंच बड़े-बड़े लोगों तक पहुंचने पर भाजपा सरकार लीपापोती करने में लग गई है। खुद भाजपा सरकार के एक मंत्री ने तबादलों में वसूली, और भ्रष्टाचार को सार्वजनिक रूप से उजागर करते हुए इस्तीफा दिया।

स्वास्थ्य विभाग में भी तबादलों के धंधे के साथ करोड़ों रूपये की दवाओं में हेराफेरी के मामले सामने आए हैं। विभाग में मंत्री और विभागीय प्रमुख के बीच खींचतान के चलते अव्यवस्था व्याप्त है। पशुपालन विभाग में करोड़ो रूपये की दवाएं एवं उपकरण खरीद के नए घोटाले के मामले भी सामने आए हैं। आवास विकास परिषद और शिक्षा विभाग में भी धांधलियां उजागर हुई है।

भाजपा सरकार घोटालों के नए-नए कीर्तिमान बनाने में भी अव्वल साबित हुई है। होम्योपैथिक विभाग में छात्रवृत्ति गबन, दारोगा भर्ती में बड़े पैमाने पर अनियमितताओं ने भाजपा सरकार की छवि दागदार बना दी है। नाली-नलकूप से लेकर शहरों से कचरा निपटान तक में लूट चल रही है। सरकार में बड़े ओहदों पर बैठे अफसरान घोटालों की जांच में कम उन्हें रफादफा करने में ज्यादा रुचि ले रहे हैं।

आजमगढ़ में नालियों और नलकूपों की मरम्मत के नाम पर लाखों रुपयों की

हेराफेरी हो गयी। इसी तरह से बस्ती में सड़क निर्माण में करीब 44 करोड़ रूपये के घोटाले का मामला सामने आया है। आगरा में प्रशासन ने कागजों पर सड़क बना दी, मौके पर सिर्फ गड्ढे हैं। इन घोटालों में पूरी सरकार शामिल है।

भाजपा सरकार में ये घोटाले नए नहीं है। ये घोटाले पांच साल से हो रहे हैं। अब खुलकर सामने आ रहे हैं। इस सरकार के घोटालों में हर दिन नए-नए घोटाले जुड़ते जा रहे हैं।

भाजपा सरकार भ्रष्टाचार और झूठे प्रचार के सहारे ही सत्ता में बने रहना चाहती है। राज्य मंत्रिमंडल में दरार सामने आ रही है और सरकार तथा अफसरशाही के बीच खींचतान थमने का नाम नहीं ले रही है। एक के बाद एक चुनाव चक्र में भाजपा की डबल इंजन सरकार येनकेन प्रकारेण सत्ता पर काबिज रहने के लिए सत्ता का दुरुपयोग कर रही है। सवाल है कि प्रदेश में हो रहे घोटालों और बढ़ती महंगाई पर भाजपा नेतृत्व कब चुप्पी तोड़ेगा? मंत्रियों ने अपनी ही सरकार के कामकाज पर जो आरोप लगाए हैं उनकी जांच कब होगी? भाजपा सरकार की 'जीरो टालरेंस' का फायदा दबंग भ्रष्टाचारी उठा रहे हैं। इस तरह की सभी अवांछित करतूतों को झूठ से छुपाने का काम भाजपा सरकार कर रही है।

भाजपा सरकार ने सौ दिन मे प्रदेश की जनता पर जिस तरह का अत्याचार किया है इतिहास में उसकी दूसरी मिसाल नहीं है। किसान और नौजवान आत्महत्या पर विवश है।

भाजपा सरकार भ्रष्टाचार और झूठे प्रचार के सहारे ही सत्ता में बने रहना चाहती है। राज्य मंत्रिमंडल में दरार सामने आ रही है और सरकार तथा अफसरशाही के बीच खींचतान थमने का नाम नहीं ले रही है

झांसी में भ्रष्टाचार के कारण किसान और इलाहाबाद में अग्निवीर योजना से क्षुब्ध नौजवान छात्र की आत्महत्या भाजपा की अहंकारी और गलत नीतियों के ताजा उदाहरण है। अपराधी सत्ता के संरक्षण में अपना अंधाधुंध विकास कर रहे है। बीजेपी कार्यकर्ता और नेता लोगों को डरा धमका रहे है।

भाजपा सरकार के सौ दिन अन्याय, अत्याचार, अपराध, अहंकार, लूट, हत्या, दलाली, भ्रष्टाचार के रूप में जाने जाएंगे। इन सौ दिनों में जनता कराह उठी है। भाजपा ने यूपी को क्राइम स्टेट बना दिया है। थाने और तहसीलें दलाली के अड्डे बन गए हैं। आम आदमी की कोई सुनवाई नहीं है। हर वर्ग परेशान है।

मुख्यमंत्री के गृह जनपद गोरखपुर में बांसगांव से भाजपा सांसद के ऊपर बुजुर्ग अधिवक्ता की जमीन पर कब्जा करने का आरोप लग रहा है। गंगा एक्सप्रेस-वे के नाम पर किसानों का उत्पीड़न एवं भ्रष्टाचार चरम पर है। भाजपा सरकार में किसानों की जमीन का बैनामा कराए बगैर ही एक्सप्रेस-वे के नाम पर काम शुरू करवा दिया गया। खबर है कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश की सीमा पर परिवहन की आवाजाही में वसूली की जा रही है। इसमें मंत्री, विधायक, अधिकारी और स्थानीय पुलिस सभी शामिल हैं।

हवा-हवाई एक्सप्रेस-वे

नकल के लिए अकल की जरूरत होती है। समाजवादी पार्टी की सरकार में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे जैसा अत्याधुनिक एवं उच्चस्तरीय एक्सप्रेस-वे बनाने का श्रेय तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को जाता है। उसकी देखा-देखी भाजपा सरकार ने पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे और अभी हाल में बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे को हवा-हवाई तरीके से चालू तो जरूर किया है लेकिन जिस तरीके से इन दोनों एक्सप्रेस वे में कई जगहों पर सड़क धंस रही हैं उससे साफ है कि उनकी गुणवत्ता में भारी समझौता किया गया है और जनता की जान को खतरे में डाला गया है। वस्तुतः भाजपा सरकार में बने एक्सप्रेस-वे जनता के लिए सहूलियत की सौगात नहीं बल्कि जी का जंजाल साबित हो रहे हैं।

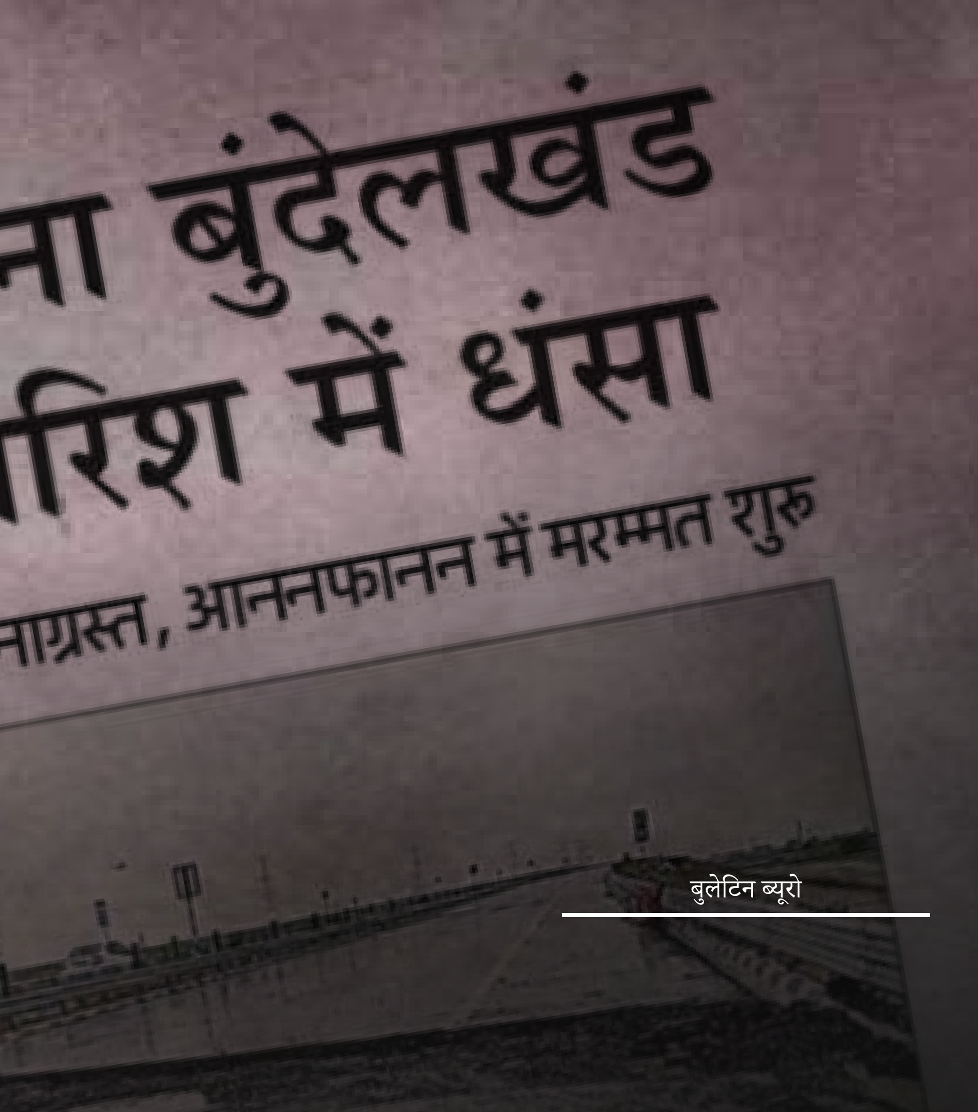

बुलेटिन ब्यूरो

भाजपा सरकार और उसके मंत्री जिस बुन्देलखंड एक्सप्रेस-वे पर इतरा रहे थे और इसे बड़ी उपलब्धि बता रहे थे वह जनता के लिए जानलेवा साबित हो रहा है।

इसका उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री ने खुद इससे जनता को लाभ मिलने का बयान दिया था लेकिन 15 हजार करोड़ की लागत से बना ये एक्सप्रेस-वे 15 दिन भी नहीं चल पाया और रोजाना जगह-जगह धंसता जा रहा है। रोजाना हो रही दुर्घटनाएं चिंताजनक है। हमीरपुर में एक्सप्रेस-वे के अंडरपास में भी दरारें आ गई हैं। इटावा में सड़क धंस गई।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर दुर्घटनाओं की जांच में गई टीम ने उसमें तमाम खामियों को इंगित किया है। जबकि समाजवादी सरकार में बने आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे की गुणवत्ता की प्रशंसा सभी कर रहे है। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर वायुसेना के लड़ाकू विमान तथा माल वाहक हरक्यूलिस विमान भी उतर चुके हैं। भाजपा सरकार में बने बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के अलावा अन्य निर्माण कार्यों की भी पोल खुल रही है।

भाजपा सरकार के निम्न स्तर के निर्माण कार्यों की वजह से जनता की जान जोखिम में है और वह प्रतिदिन दुर्घटनाओं का शिकार हो रही है। आखिर भाजपा सरकार के निर्माण कार्यों की खामियों और लापरवाहियों का खामियाजा जनता क्यों भुगते? जनता टैक्स का पैसा भी दे और इलाज पर भी खर्च करे यह कब तक चलेगा?

दरअसल भाजपा को हवा में महल बनाने की नायाब कला आती है। आधे अधूरे बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन जिस हड़बड़ी में किया गया, उसे जनता के विश्वास के साथ राजनीतिक धोखाधड़ी ही कहा जा सकता है।

जिस बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन हुआ है वहां सिर्फ पिलर खड़े हैं, स्लैब अधूरी है, सरियों के ढांचे हैं। बस बोल दिया कि बन गया एक्सप्रेस-वे ! अधूरी सड़कों का

National

Bundelkhand Expressway: 18 दिन भी नहीं चली 18 हजार करोड़ की सड़क, सरकार के दावों की खुली पोल

By Ravesh Gupta

Published: 21st Jul, 2022 at 7:27 PM

Bundelkhand Expressway: बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे अब बांदा और इटावा में भी धंसा, आईं दरारें

संवाद न्यूज एजेंसी, ताखा (इटावा) Published by: अनुराग सक्सेना

Updated Fri, 22 Jul 2022 11:31 PM IST

सार

इटावा में गुरुवार की रात हुई तेज बारिश के बाद बेलाहार से कुदरैल तक एक्सप्रेसवे के लगभग आठ किलोमीटर क्षेत्र में मिट्टी कटान से छह जगह सड़क ... बिल्डकान कंपनी ने इतने ... कर्मचारी एक्सप्रेस-वे दुरुस्त ...

हिंदी न्यूज़ / समाचार / राज्य

Bundelkhand Expressway: बरसात के आगे नहीं टिक सका बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, उद्घाटन के पांचवें दिन ही धंसा

यूपी के मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का प्रधानमंत्री द्वारा लोकार्पण करने के पांचवें दिन ही जालौन में एक हिस्सा तेज बारिश में धंस गया। इससे एक लेन पर यातायात रोककर सुधार कार्य कराया गया है।

Abhishek Agnihotri

New GST Rates: 18 जुलाई से पैकेटबंद आटा, दूध और पनीर होगा महंगा, अस्पतालों में प्राइवेट बेड पर भी जीएसटी

बिजनेस डेस्क, अमर उजाला, नई दिल्ली Published by: विवेक दास

Updated Thu, 30 Jun 2022 02:23 PM IST

सार एप में पढ़ें

18 जुलाई के बाद जिन चीजों पर महंगाई की तगड़ी मार पड़ने वाली है उनमें पैकेटबंद और लेबल लगा गेहूं का आटा, दुग्ध ...

Bundelkhand Expressway: कहीं दरकी सड़क तो कहीं मिट्टी का कटान... ये है हाल-ए-बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे

पहली बरसात के बाद ही बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के निर्माण पर सवाल उठने लगे हैं. एक्सप्रेस-वे के 286.6 किलोमीटर पर एक पुलिया बनाई गई है, जिसके दोनों तरफ बड़ी स्थिति में मिट्टी का कटान हो गया है. मिट्टी कटान कई और जगह हुआ है, जिस वजह से सड़क दरक गई है.

Four-lane Bundelkhand expre... develops wide cracks

Residents say at least three small bridges on highway too have cave in, and soil erosion has damaged sides of road at many places

Bundelkhand Expressway : मोदी जी ने जिस बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का 4 दिन पहले किया था उद्घाटन, वह पहली बारिश में ही गया धंस

... Expressway : प्रधानमंत्री नरेंद्र ... खंड एक्सप्रेस वे का उद्घाटन किया था, ... ी बारिश में ही सामने आ गई है, ... बीती रात बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे की

Bundelkhand Expressway: बारिश में धंस गया एक्सप्रेस-वे, उद्घाटन के पांचवें दिन ही हादसा

बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के 195 किलोमीटर के खंभे के पास बुधवार रात तेज बारिश में एक्सप्रेस-वे की कुछ सड़क धंस गई. रात में ही बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे की कार्यदायी संस्था UPEIDA ने सड़क का मरम्मत करना शुरू कर दिया था.

उद्घाटन कर जनता को भ्रमित किया गया है। न टोल तैयार, नहीं कनेक्टिंग रोड बनी। बस ऐसे ही उद्घाटन पर जनधन लुटा दिया गया।

समाजवादी सरकार में डिजाइन हुए आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर वायु सेना के विमान भी उतारे जा सके। लेकिन बुन्देलखण्ड की डिजाइन ऐसे ही चलताऊ बनी है तभी डिफेंस कॉरिडोर के पास होने के बाद भी यहां भाजपा सरकार समाजवादी सरकार के समय बनी एक्सप्रेस-वे जैसी हवाई पट्टी तक नहीं बना पाई। भाजपा का अधूरा एक्सप्रेस-वे चित्रकूट तक भी नहीं पहुंच पाया।

भाजपा सरकार ने अपनी वाहवाही के लिए आधे-अधूरे एक्सप्रेस-वे का लोकार्पण तो करा लिया किन्तु उसके आसपास बुनियादी सुविधाओं तक की व्यवस्था नहीं की गई। किसानों के लिए मंडी नहीं बनाई गई। किसान हितैषी का झूठा तमगा लगाकर भाजपा सरकार ने वस्तुतः किसानों को धोखा देने का रिकार्ड दोहराया है। जब वहां निवेश नहीं आया और उद्योग नहीं लगे तो नौजवानों को रोजगार कहां मिलेगा? रेवड़ी बांटकर थैंक्यू का अभियान चलवाने वाले सत्ताधारी अगर युवाओं को रोजगार दें तभी वे 'दोषारोपण संस्कृति' से बच सकते हैं।

सच तो यह है कि एक्सप्रेस-वे जैसी परियोजनाओं को बनाने का श्रेय समाजवादी सरकार को जाता है। एक्सप्रेस-वे बनाने के लिए भाजपा नेतृत्व समाजवादी पार्टी सरकार की नकल तो कर सकता हैं पर उस जैसी गुणवत्ता नहीं दे सकता है।

भाजपा का खोखला विकास कार्यक्रम बुन्देलखण्ड में अच्छे दिन आने की तनिक भी संभावना नहीं जगाता है। यहां किसान, नौजवान बदहाली में जी रहे हैं। जल संकट के साथ शिक्षा-स्वास्थ्य के क्षेत्र में घोर उपेक्षा बरती जा रही है।

यह समाजवादी सरकार ही थी जिसने बुन्देलखण्ड में विकास की वास्तविक नींव रखी थी। चरखारी में सात सरोवरों के जीर्णोद्धार के साथ उनका सौंदर्यीकरण कराया था। वृहद वृक्षारोपण का रिकॉर्ड कायम किया गया। रोजी-रोजगार की नई व्यवस्था की। किसानों, गरीबों और नौजवानों के लिए विशेष योजनाएं शुरू की थीं। भाजपा सरकार ने आते ही जनहित को तिलांजलि देने और समाजवादी सरकार की योजनाओं को बर्बाद करने का काम किया है।

सपा का सदस्यता अभियान

समाजवादी पहचान

दुष्यंत कबीर

नए लक्ष्यों की सफलता सुनिश्चित करने और भविष्य की चुनौतियों के मुकाबले के लिए समाजवादी पार्टी ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है। समाजवादी पार्टी ने नए सिरे से सदस्यता अभियान की शुरुआत कर दी है। सदस्यता अभियान के तहत नए लोगों को पार्टी से जोड़ने एवं उन्हें समाजवादी पहचान दिलाने के लिए समाजवादी पार्टी पूरे प्रदेश के सभी गांवों, कस्बों और शहरों में घर-घर पहुंच रही है। सदस्यता अभियान के जरिए पार्टी जन-जन तक अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को बताने के साथ आम जन को भाजपा सरकार की विफलता और लोकतंत्र के खतरे की भी जानकारी दे रही है।

दिनांक 5 जुलाई को समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ कवि श्री उदय प्रताप सिंह ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को सदस्य बनाकर समाजवादी पार्टी के सदस्यता अभियान का शुभारंभ किया। इस सदस्यता अभियान के साथ समाजवादी पार्टी ने 2024 में होने वाले लोकसभा और 2027 में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी संगठन में बड़े बदलाव की ओर कदम उठाया है। सदस्यता अभियान के बाद संगठन को और मजबूती मिलेगी।

लोकतंत्र बचाने के लिए
समाजवादी पार्टी

लोकतंत्र बचाने के लिए
समाजवादी पार्टी
के सदस्य बनें

इससे पहले दिनांक 3 जुलाई को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने तत्काल प्रभाव से उत्तर प्रदेश अध्यक्ष को छोड़कर समाजवादी पार्टी की प्रदेश कार्यकारिणी, अध्यक्ष समेत सभी जिला, एवं विधान सभा अध्यक्ष महानगर कार्यकारिणी, सभी युवा संगठनों, महिला सभा सहित सभी प्रकोष्ठों के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष के साथ उनकी राष्ट्रीय एवं राज्य कार्यकारिणी को भी भंग कर दिया।

समाजवादी पार्टी के सदस्यता अभियान की शुरुआत करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह लोकतंत्र को बचाओ अभियान है। उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान में वे स्वयं भी चिह्नित कर गांव-शहरों में जाएंगे। उन्होंने पार्टी नेताओं तथा कार्यकर्ताओं से ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने के लिए गांव-गांव, घर-घर जाने की अपील की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह लोकतंत्र को बचाओ अभियान है। उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान में वे स्वयं भी चिह्नित कर गांव-शहरों में जाएंगे। उन्होंने पार्टी नेताओं तथा कार्यकर्ताओं से ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने के लिए गांव-गांव, घर-घर जाने की अपील की

उन्होंने कहा इस अभियान में बूथ स्तर तक हर वर्ग तक जाना है। हर दरवाजे तक पहुंचकर पार्टी की नीति, कार्यक्रम और फैसलों की जानकारी दी जाएगी। श्री यादव ने कहा कि यह सदस्यता अभियान लोकतंत्र को बचाओ का अभियान चलता रहेगा। इस अभियान में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की भी सक्रिय भूमिका होगी।

श्री उदय प्रताप सिंह ने इस अवसर पर कहा कि आज लोकतंत्र खतरे में है। हमें समाजवाद को मजबूत करना होगा। संविधान की उद्देशिका में वर्णित लोकतंत्र, समाजवाद और पंथनिरपेक्षता परस्पर एक दूसरे से संबंधित है।

5 जुलाई को अभियान की शुरुआत पर अपनी सदस्यता लेने के बाद श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल के साथ लखनऊ के सभी

नौ विधानसभा क्षेत्रों के प्रत्याशी रहे पार्टी के नेताओं समेत कुछ वरिष्ठ नेताओं को सदस्यता दिलायी।

श्री अखिलेश यादव ने अपने हस्ताक्षर से लखनऊ मध्य क्षेत्र के विधायक श्री रविदास मेहरोत्रा, लखनऊ पश्चिम क्षेत्र के विधायक श्री अरमान खान, पूर्व सांसद एवं मोहनलालगंज से विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी श्रीमती सुशीला सरोज, सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी रहे, पूर्व मंत्री श्री अभिषेक मिश्रा, बख्शी का तालाब से प्रत्याशी श्री गोमती यादव, मलिहाबाद से प्रत्याशी श्री सोनू कनौजिया, लखनऊ पूर्व से प्रत्याशी श्री अनुराग भदौरिया, लखनऊ उत्तर से प्रत्याशी पूजा शुक्ला, लखनऊ कैंट क्षेत्र से प्रत्याशी श्री राजू गांधी सहित पूर्व मंत्री आरके चौधरी पूर्व प्रत्याशी मेयर श्रीमती मीरावर्धन, सांसद प्रत्याशी सीएल वर्मा तथा श्रीमती राजबाला रावत एवं जयसिंह जयंत समेत अन्य कई नेताओं को पार्टी की सदस्यता दिलायी।

जोर-शोर से जारी अभियान के तहत समाजवादी पार्टी जहां एक तरफ नए सदस्य बना रही है वहीं दूसरी तरफ जनता को केंद्र और प्रदेश की सत्ता पर काबिज भाजपा सरकार के संविधान विरोधी, अलोकतांत्रिक कार्यों और लोकतंत्र के खतरे से आगाह भी कर रही है। भाजपा सरकार में कमरतोड़ महंगाई, हर क्षेत्र में हुए भ्रष्टाचार और घोटालों, ध्वस्त कानून-व्यवस्था, बेरोजगारी की समस्याओं को उजागर करते हुए लोकतंत्र बचाने के लिए समाजवादी पार्टी के साथ आने की अपील की जा रही है।

संगठन को मजबूत बनाने और पार्टी की पहुंच हर वर्ग, हर क्षेत्र गांव, शहर और मोहल्लों तक बनाने के लिए समाजवादी पार्टी के हजारों की संख्या में कार्यकर्ता, नेता, पदाधिकारी, विधायक, सांसद, पूर्व विधायक, पूर्व सांसद सभी लोग मजबूती से जुटे है। सदस्यता अभियान की मॉनिटरिंग खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव कर रहे हैं। इस अभियान को हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए श्री अखिलेश यादव ने पार्टी के 18 वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं की टीम बनाई है।

इस टीम में समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल, पूर्व मंत्री एवं विधान परिषद सदस्य स्वामी प्रसाद मौर्य, पूर्व मंत्री एवं विधानसभा सदस्य इंद्रजीत सरोज, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री राम अचल राजभर, पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्र वर्मा, पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री महबूब अली, पूर्व मंत्री श्री दयाराम पाल, पूर्व मंत्री किरण पाल कश्यप, पूर्व मंत्री अरविन्द सिंह गोप, पूर्व नेता प्रतिपक्ष विधान परिषद श्री संजय लाठर, पूर्व एमएलसी शशांक यादव, समाजवादी बाबा साहब अम्बेडकर वाहिनी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मिठाई लाल भारती, पूर्व मंत्री श्री राम आसरे विश्वकर्मा, समाजवादी शिक्षक प्रकोष्ठ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो.वी पाण्डेय, श्री केके श्रीवास्तव और डा. हरिश्चन्द्र यादव शामिल हैं।

सिर्फ और सिर्फ समाजवाद!

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

इतिहास का अंत। विचारधारा का अंत। आलोचना का अंत। और न जाने किन किन चीजों का अंत घोषित करने की पश्चिमी वैचारिक दुनिया की मुहिम भी अब अंत के करीब है। जिस जैक देरीदा, मिशेल फुको जैसे दार्शनिकों ने इस 'पोस्ट माडरनिज़्म' की मुहिम की अगुआई की थी वे खुद अपनी भविष्यवाणियों का हश्र देखकर अपनी पोजीशन बदल रहे हैं। पर इस मुहिम ने एक काम जरूर कर दिया है उन्होंने 'पोस्ट-ट्रुथ' को दुनिया का एक लोकप्रिय जुमला बना दिया है।

पोस्ट ट्रुथ यानी उत्तर सच अर्थात सच से आगे की चीज अर्थात सच कुछ नहीं है और हम जो कहते-करते हैं वही सब कुछ है। और अगर इस नई विधा (जिसकी एक झलक दुनिया ने हिटलर और गोएबल्स वाले

दौर में देखी थी) के 'नायकों' को जानना हों तो डोनाल्ड ट्रम्प, पुतिन, नरेंद्र मोदी जैसों की पूरी फौज विश्व राजनीति पर उभरती और छा जाती दिखेगी जिसे झूठ, अनैतिकता और हजारों लोगों का खून बहाकर भी राज करने में कोई शर्म नहीं रहा है और जो सत्ता और धन के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। इन महानुभावों ने राजनीति की परिभाषा बदल दी। पर जैसे उत्तर-आधुनिक दार्शनिकों का युग बहुत तेजी से खत्म हुआ है (और उनमें से कई ने बौद्धिक ईमानदारी दिखाते हुए अपनी गलती मानी है)। उसी तरह इस राजनीतिक नेतृत्व का दौर ढलान पर है। झूठ और फरेब के बादशाह ट्रम्प तो विदा भी हों चुके हैं और अब की मुकदमे झेल रहे हैं।

दरअसल में यह दौर कुछ अति महत्वाकांक्षी दार्शनिकों और नेताओं के चलते नहीं आया है। इसकी असली वजह लगभग सौ साल से कायम कम्यूनिज़्म के दर्शन, सोवियत और चीनी साम्यवादी व्यवस्थाओं की असफलता थी। इसने दुनिया में पूंजीवाद का, उसकी लाइन पर चलने वाले अमेरिका और पश्चिम सोच से चलने वालों की जीत का भ्रम पैदा किया, वरना सोवियत संघ जैसी एक खास किस्म की व्यवस्था के पतन में जश्न मनाने वाली चीज नहीं होनी चाहिए थी।

असल में सोवियत व्यवस्था पश्चिमी पूंजीवादी मॉडल का हल्का बदला रूप थी जिसे गांधी और उनसे भी बढ़कर लोहिया जैसे हमारे दार्शनिकों ने बहुत अच्छी तरह समझ लिया था। बल्कि डा. लोहिया ने तो कम्यूनिज़्म को कोलोनीयलिज़्म और क्रिश्चयनिटी के बाद तीसरी दुनिया के देशों के खिलाफ यूरोप का नवीनतम हथियार बताया था। सोवियत व्यवस्था के खिलाफ किस तरह अमेरिका और सीआईए लगे रहे और सोवियत संघ भी किस तरह सारा समाजवाद भुलाकर क्रांति के नाम पर अपना साम्राज्यवाद बनाने में लगा उस चर्चा में जाने का अब ज्यादा फायदा नहीं है। लेकिन यह जानना जरूरी है कि हमारे समाजवादी आंदोलन ने पूंजीवाद, पश्चिमी मॉडल के विकास ही नहीं साम्यवाद के बारे में जो दृष्टि अपनाई थी उसे आज इतिहास सही साबित कर रहा है और उसे दिशा में ज्यादा तेजी से बढ़ाने की जरूरत है।

सोवियत व्यवस्था पश्चिमी पूंजीवादी मॉडल का हल्का बदला रूप थी जिसे गांधी और उनसे भी बढ़कर लोहिया जैसे हमारे दार्शनिकों ने बहुत अच्छी तरह समझ लिया था। बल्कि डा. लोहिया ने तो कम्यूनिज़्म को कोलोनीयलिज़्म और क्रिश्चयनिटी के बाद तीसरी दुनिया के देशों के खिलाफ यूरोप का नवीनतम हथियार बताया था

जब सोवियत संघ गिरने और बिखरने को था और चीन ने भी साम्यवाद का चोला पहने रखकर पूंजीवाद अपनाया तो दुनिया में अमेरिका और ब्रेटनवुड की संस्थाओं (विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष वगैरह) की अगुआई में वैश्वीकरण के नाम पर एक मुहिम शुरू हुई। इसमें पूंजी और वस्तुओं की दुनिया भर में आवाजाही, हर संसाधन और हर बाजार तक पहुंच और जीवन के विभिन्न रूपों (मनुष्य से लेकर पेड़-पौधों तक को पेटेंट के जारिए बाजार के हाथ कैद करने की मुहिम शुरू हुई)।

बाद में श्रम और पर्यावरण के मसलों को भी समेट लिया गया पर जिम्मेदारी के नाम पर बाजार को कुछ भी नहीं सौंपा गया। सरकारों को बाजार का लठैत बनाने का काम किया गया। सामान और पूंजी की आवाजाही सुगम करने के साथ ही मनुष्य, खासकर श्रमिकों की आवाजाही पर बाधाएं खड़ी की गईं। कहना न होगा जब तक विश्व व्यापार संगठन बना तब तक विकसित देशों के अपने स्वार्थ भी टकराने लगे, खासकर यूरोप और अमेरिका के। लिहाजा आधी अधूरी व्यवस्था चल रही है लेकिन इसको समेटने का प्रयास आज भी जारी है।

इसी बीच अमेरिका में सब-प्राइम संकट ने उसकी अर्थव्यवस्था को ही नहीं दुनिया भर को जितना प्रभावित किया उससे ज्यादा बड़ी चोट वैश्वीकरण की अवधारणा पर की। आज दुनिया में ब्रेटनवुड संस्थाओं की पूछ समाप्त सी है और सचमुच कर्ज लेने कोई नहीं जा रहा है। बाजार में आवारा पूंजी इतनी बड़ी मात्रा में है कि उसका ही कोहराम ज्यादा खुलकर होने लगा है।

दुनिया में शुरू इस मुहिम को अपने यहां का आम आदमी क्या पढ़े-लिखे लोग और राजनेता वर्ग भी ठीक से समझे तब तक इससे लाभ पाने वाले या लाभ की उम्मीद करने वाले वर्ग ने इसकी हवा बनानी शुरू की।

इस मुहिम में अंग्रेजी मीडिया और बाद में पूरे

फोटो स्रोत : गूगल

मीडिया ने बाजार का साथ दिया। जब यह सब कुछ चल रहा था और नरसिंह राव तथा अटल बिहारी जैसों की सरकार सारी अर्थव्यवस्था को बाजार के हवाले करने में जुटी थी तब दो और चीजें हुईं। संघ परिवार के बाबरी मस्जिद विरोध को भाजपा ने चुनावी लाभ के लिए आजमाया तो उनकी काट के लिए वीपी सिंह ने धूल फांक रही मण्डल आयोग की रिपोर्ट को झाड़-फूंक कर सामने किया और एक दिन इसे लागू करने की घोषणा कर दी।

मंदिर आंदोलन ने भी काफी ऊर्जा पैदा की लेकिन मण्डल से निकली ऊर्जा ने सबको ढक लिया। जब बाबरी मस्जिद टूटी और कल्याण सिंह सरकार को बर्खास्त किया गया, तब हुए चुनाव में समाजवादी पार्टी और बसपा ने भाजपा को बुरी तरह हराया जबकि मस्जिद टूटने पर पूरा प्रदेश भयंकर सांप्रदायिकता की आग में झुलसा था, पचास से ज्यादा जगहों पर दंगे हुए थे। यह परिणाम मुलायम सिंह और स्वर्गीय कांशीराम के लिए अनपेक्षित नहीं रहा होगा लेकिन ज्यादातर राजनीतिक पंडितों के लिए हैरान करने वाली चीज थी।

वहीं, समाजवादी चिंतक किशन पटनायक ने इस जीत की भविष्यवाणी बहुत भरोसे से की थी। अपनी पत्रिका सामायिक वार्ता में लिखी लेखमाला में, जो अब 'भारत शूद्रों का होगा' (सेतु प्रकाशन, दिल्ली) नाम से पुस्तक रूप में उपलब्ध है, उन्होंने यह चेतावनी भी दी थी कि बाजार और कमंडल की ताकत खतरनाक है और अगर मंडलवादी नेतृत्व सावधान न रहा तो बाजार सब पर हावी हो जाएगा और मण्डल का लाभ गायब हो जाएगा। यह अद्भुत विश्लेषण वाला आलेख अब भी पढ़ना चाहिए क्योंकि इसमें मण्डल की संभावनाओं के साथ खतरों को बहुत अच्छी तरह बताया गया था। पच्चीस साल से ज्यादा पहले लिखे इस किताब को पढ़ने से यह भी लगेगा कि मंडलवादी नेतृत्व ने बाद में क्या कुछ गलतियां कीं।

जाहिर है, सारी गलतियों के बावजूद उत्तर प्रदेश और बिहार का नेतृत्व कुछ मामलों में खास रहा जिसने सारे झंझावात झेलकर भी समाजवाद और मण्डल का अर्थात पिछड़ावाद का अस्तित्व खत्म नहीं होने दिया है। पिछड़ों की आबादी का अनुपात बिहार में ज्यादा है तो अभी तक वहां पिछड़ा राज कायम है लेकिन उत्तर प्रदेश में विरोधी ताकतें ज्यादा मजबूत हुई हैं और कभी समाजवादी पार्टी तो कभी दूसरी ताकतों के सत्ता में आने-जाने का क्रम जारी है।

किशन जी समाजवादी धारा के प्रखर बौद्धिक थे, लोहिया के सहयोगी थे और बहुत

बातों पर मौलिक राय रखते थे इसलिए उन्हें द्विज नेतृत्व की सीमाएं और पिछड़ों के उभार की संभावनाओं को देखने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

यह धारा ज्योतिबा फुले से लेकर लोहिया तक आती है और किशन जी या मुलायम सिंह उसी को आगे बढ़ा रहे थे/हैं। इसमें समाज के पिछड़ों को सर्वहारा मानना और उनका संगठन बनाना, अपने संगठन में उनको विशेष अवसर देना और फिर संसद और विधान सभाओं में ही नहीं दाखिले और नौकरियों में विशेष अवसर की बात चलाने की समझ शामिल है।

आज इस बात को वे कम्युनिस्ट भी मानने लगे हैं जो कभी लोहिया को जातिवादी कहकर गालियां देते थे। कांग्रेस और बाकी सब भी आरक्षण के पक्षधर हैं, और होड़ लगाकर दलितों-पिछड़ों को लुभाने में लगे हैं। पर सबसे रंगा सियार भाजपा और संघ परिवार निकला है जो मण्डल लागू होने तक आरक्षण का विरोधी था और अभी भी जब-तब संघ प्रमुख आरक्षण समाप्त करने की बात करते हैं।

खुद को पिछड़ा बताने और पिछड़ों की एकता में फूट डालने का कोई मौका न गंवाने वाले नरेंद्र मोदी की सरकार आरक्षण को समाप्त करने में ही लगी है। न भर्ती होगी न आरक्षण मिलेगा। और सब कुछ निजी हाथों में चला जाएगा तो भला वहां कौन आरक्षण मांगेगा और देगा!

भारत में जाति व्यवस्था की असलियत और पिछड़ों की कमजोरी (डाक्टर लोहिया के पिछड़ा की परिभाषा में औरत भी शामिल है, इसे कभी नहीं भूलना चाहिए) को जानने में, अपनी राजनीति में इस वर्ग को शामिल करने में ही समाजवादी जमात आगे नहीं रहा है, लोकतंत्र को बचाने, चलाने और उसकी वकालत करने में वह सबसे आगे रहा है। उसने कभी भी बिना लोकतंत्र वाली समाजवादी (या कोई और व्यवस्था) कबूल नहीं की। साम्यवादी जमात से उसका शुरू से इसी लोकतंत्र के सवाल पर मतभेद रहा है। सच्चिदानन्द सिन्हा जैसे समाजवादी चिंतक, जो सन् बयालीस से अभी तक सक्रिय हैं, का

उत्तर प्रदेश और बिहार का नेतृत्व कुछ मामलों में खास रहा जिसने सारे झंझावात झेलकर भी समाजवाद और मण्डल का अर्थात पिछड़ावाद का अस्तित्व खत्म नहीं होने दिया है। पिछड़ों की आबादी का अनुपात बिहार में ज्यादा है तो अभी तक वहां पिछड़ा राज कायम है लेकिन उत्तर प्रदेश में विरोधी ताकतें ज्यादा मजबूत हुई हैं और कभी समाजवादी पार्टी तो कभी दूसरी ताकतों के सत्ता में आने-जाने का क्रम जारी है

कहना है कि हमारा समाजवादी जमात समाजवाद लाने में भले सफल न हुआ हो लेकिन लोकतंत्र लाने और उससे भी बढ़ाकर लोकतंत्र को बचाए रखने में जरूर सफल रहा है। जब नेहरू का एकछत्र राज हुआ, कम्युनिस्टों को लोकतंत्र से कोई मतलब न था, जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी के लिए भी लोकतंत्र बेमतलब चीज थी तब मुट्ठी भर समाजवादियों ने संसद से लेकर सड़क तक संघर्ष के जरिए लोकतंत्र और लोकतान्त्रिक संस्थाओं को जिंदा रखा। आपातकाल में माफी मांगने का पूरा रिकार्ड भाजपाइयों और संघ के लोगों का है तो इंदिरा गांधी की पालकी ढोने का रिकार्ड कम्युनिस्टों का।

समाजवाद की असली भावना आजादी के साथ समानता की है, समृद्धि के समान बंटवारे की है। जिसे कोई समाजवादी कभी नहीं भूला है। बल्कि उल्टा हुआ है कि सत्ता में हो या बाहर, समाजवादी जमात (और इस मामले में सच्ची राजनीति करने वाली पूरी जमात) सबसे ज्यादा लड़ने-भिड़ने वाले रही है।

हमारे समाजवादी आंदोलन के लोग गांधी की राजनीति को लेकर कुछ शक-शुबहे भले करते रहे हों उन्होंने ने गांधी के सत्याग्रह अर्थात अहिंसक प्रतिरोध के तरीके पर पूरा भरोसा किया और कभी हिंसा का सहारा लेकर अपनी लड़ाई को आगे नहीं बढ़ाया। एक दौर में जेल और फावड़ा (जो रचनात्मक काम का प्रतीक माना जाता है) समाजवादी जमात की पहचान रहा। अब हो यह गया कि ज्यादा जोर जेल पर चला गया और रचनात्मक काम पीछे रह गए।

गांधी से शुरू हुआ विकल्प देने का (पश्चिमी सभ्यता और औद्योगिक विकास का) अभियान सिर्फ चरखा और फावड़े तक सीमित नहीं रहा। अपनी बहुत छोटी पुस्तिका 'भारतीय राज्य-व्यवस्था का पुनर्गठन (ए प्ली फॉर रीकंस्ट्रक्शन आफ इंडियन पोलिटी' में जेपी ने विकेंद्रित शासन व्यवस्था और आर्थिक कार्य व्यापार का खूबसूरत मॉडल दिया है। यह आलेख पंडित

फोटो स्रोत : गूगल

नेहरू की चुनौती पर लिखा गया था। डॉक्टर लोहिया ने चौखंभा राज का क्रांतिकारी वैकल्पिक मॉडल दिया। डॉक्टर साहब ने तो बाकायदा छोटी मशीन, दाम बांधों और खर्च पर सीमा जैसी बहसों को जारी रख गांधी से आगे का और ज्यादा व्यावहारिक मॉडल पेश किया है।

इस बहस से यह भी साफ हुआ कि अंतरराष्ट्रीय बाजार किस किस्म से कीमतों का फरेब चलता है, विदेशी मुद्रा की कीमत का खेल क्या है और किस तरह बड़ी मशीन, बड़ी पूंजी और बहुत ऊंच-नीच वाली हायरार्की साथ लाती हैं जो ब्राह्मण और दलित वाली जाति की हायरार्की से भी ज्यादा प्रबल और असमान है।

समाजवादी जमात न तो गांधी को भूला न लोहिया और जेपी को। ये उसके लिए प्रेरणा-पुरुष ही नहीं, आधार रहे हैं। बल्कि अक्सर इनको किसी भी नई बात में यह ताना सुनना होता है कि वे लोहिया-जेपी-गांधी के मार्ग से भटक रहे हैं। इधर उसमें धीरे-धीरे अंबेडकर से प्रेम बढ़ता गया है। मण्डल के बाद के दौर की यह सच्चाई है। भाजपा के मजबूत होने के बाद दलित-पिछड़ा और अल्पसंख्यक मेल भी स्वाभाविक ढंग से बढ़ता गया है।

जाहिर तौर पर समाज की सबसे बड़ी जमात होने की राजनीति का चुनावी लाभ जरूर है लेकिन जब यह सबसे कमजोर और गरीब जमात हो तो मुश्किलें और परीक्षा और ज्यादा सख्त हो जाती है। दूसरी तरफ धर्म का नाम और नकली राष्ट्रवाद की चाशनी लिए राजनीतिक ठगों का गिरोह भी सक्रिय है

जाहिर तौर पर समाज की सबसे बड़ी जमात होने की राजनीति का चुनावी लाभ जरूर है लेकिन जब यह सबसे कमजोर और गरीब जमात हो तो मुश्किलें और परीक्षा और ज्यादा सख्त हो जाती है। दूसरी तरफ धर्म का नाम और नकली राष्ट्रवाद की चाशनी लिए राजनीतिक ठगों का गिरोह भी सक्रिय है। दलित और कमजोर के नाम पर राजनीति के नाम पर निजी धन और ताकत बढ़ाने वाले भी कहीं नहीं गए हैं।

एक और प्रसंग की चर्चा जरूरी है वरना समता, आजादी और बंधुत्व के मूल विचार पर अड़ने वाले गांधी, लोहिया और जेपी का वास्तविक महत्व समझ नहीं आएगा। जब विश्व व्यापार संगठन बनाने के लिए परदेदारी के चलते 'गैट' के अधीन उरुग्वे दौर की बातचीत शुरू हुई (उल्लेखनीय है कि पहली बैठक में वित्त मंत्री के तौर पर मण्डल वाले वी. पी. सिंह ही इसमें शामिल हुए थे)। डंकेल प्रस्ताव भी छुपा-छुपी में वितरित हुआ।

पर जब सिएटल में बैठक हुई तो दुनिया भर के जनांदोलनों के लोग विरोध करने पहुंच गए। फिर कठोर राजशाही वाले दोहा में बैठक की गई तो वहां लाख मुश्किल उठाकर भी विरोधी पहुंचे और उन्होंने समांतर वर्ल्ड सोशल फोरम बना लिया।

जिन तीन चीजों को उन्होंने विरोध और विकल्प का आधार बनाया उन्हें गांधी से लेने का दावा किया गया। ये तीन चीजें हैं- दुनिया की विविधता का आदर, विकेंद्रीकरण और टिकाऊ विकास। बताना न होगा कि इन सवालों पर गांधी की सोच को आगे और व्यावहारिक बनाने वाले लोहिया और जेपी ही हैं जिनकी चर्चा पहले की गई है और जिनकी विरासत आज सिर्फ और सिर्फ समाजवादियों के पास है-कुजात गांधीवादियों के पास!

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

भारतीय समाजवाद को फिर से रोपिए

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि विचारहीन शक्ति राक्षस है तो शक्तिहीन विचार बांझ। इसी के साथ यह भी कहा जा सकता है कि विचार और शक्ति की हर साझेदारी में नैतिकता बहुत जरूरी है। कभी महात्मा गांधी ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था के बारे में पूछे जाने पर कहा था कि वह ऐसे सुंदर वृक्ष की तरह से है जिसकी जड़ें खोद दी गई हैं और उस पर मिट्टी डालना भुला दिया गया है। आज ऐसी ही बात भारतीय समाजवाद के बारे में कही जा सकती है। आजादी के इस अमृत महोत्सव के मौके पर भारतीय समाजवाद के उस सुंदर वृक्ष को फिर से हरा भरा करने की जरूरत है। भारतीय समाजवाद को दो शक्तियों से लड़ने की जरूरत सदैव रही है। एक है पूंजीवाद और दूसरी है जाति व्यवस्था। लेकिन इन दोनों के सहयोग से खड़ी तीसरी शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और वह है सांप्रदायिकता। पूंजीवाद, जिसका जन्म यूरोप में हुआ उसने भारत समेत एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के देशों में आकर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का रूप ले लिया। पूरी दुनिया में चले स्वाधीनता संग्राम उसी दासता से मुक्ति के लिए आयोजित किए गए।

पूंजीवाद ने बड़ी चालाकी के साथ अपने कदम पीछे खींच लिए और मुक्ति संग्राम अपनी विजय के उल्लास में यह भूल गया कि उसकी आखिरी मंजिल कहां है। जब दुनिया के नव स्वतंत्र देशों में वहां की राजनीतिक सत्ता स्थिर हो गई तो उसने समझ लिया कि अब असमानता पर आधारित सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना से लड़ने का कार्यक्रम पूरा हो चुका है और उसे भूल कर महज उसका उत्सव मनाया जाना चाहिए।

आज आजादी का अमृत महोत्सव इसी भावना से मनाया जा रहा है। उसका उद्देश्य किसी वास्तविक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गुलामी से संघर्ष के कार्यक्रम को तय करना नहीं है। न ही उसका उद्देश्य समता और स्वतंत्रता के मूल्यों को गहराई तक ले जाना है। बल्कि आर्थिक नव उदारवाद और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के रूप में फिर लौट कर आए और लोकतंत्र की जड़ों को खोखला करने वाले विश्व पूंजीवाद के कार्यक्रम को लागू करना है।

ऐसे में भारतीय समाजवाद को अपनी लंबी विकास यात्रा का स्मरण करना और उसे नए संदर्भ में प्रासंगिक बनाया जाना जरूरी है। समाजवादी पार्टी (और समाजवादी विचारधारा से प्रभावित अन्य पार्टियों) के लिए बेहद जरूरी है कि वे अपने संगठन का विस्तार करें और अपनी आर्थिक राजनीतिक शक्ति को आम जन से प्राप्त करें। लेकिन उसी के साथ यह भी जरूरी है कि अपने विचारों को समय की निष्ठुर चट्टान पर रगड़ कर नई धार दें।

समाजवादी पार्टी (और ऐसी अन्य पार्टियां) विपक्ष में रह कर यह काम ज्यादा नैतिक

और प्रखर तरीके से कर सकती है और सत्ता में आने के बाद उसे मूर्त रूप दे सकती हैं। इसलिए यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि यह समय संघर्ष का है और रचना का काम उससे एक कदम पीछे रह कर चल सकता है। जबकि सत्ता में आने के बाद रचना का काम तेज हो जाता है और संघर्ष का काम एक कदम पीछे हो जाता है। इन्हीं कामों के समन्वय को डा. राम मनोहर लोहिया ने जेल, फावड़ा और वोट की संज्ञा दी है।

जेल संघर्ष का प्रतीक है, फावड़ा रचना का और वोट राजनीतिक व्यवस्था में अहिंसक लोकतांत्रिक परिवर्तन का। जाहिर है जब संघर्ष का कठिन समय होता है तो युवा आगे रहते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि युवाओं को रचनात्मक कामों से पीछे रहना चाहिए। संघर्ष के साथ साथ उनका रचना के लिए प्रशिक्षण भी होते रहना चाहिए। कहने का अर्थ यह भी नहीं है कि रचना का काम सिर्फ बुजुर्गों या पिछली पीढ़ी के जिम्मे छोड़ा जाना चाहिए और यह मान लेना चाहिए कि वे संघर्ष नहीं कर सकते। लेकिन यह मानने में कोई हर्ज नहीं है कि युवाओं को उनके अनुभव का लाभ उठाना चाहिए और उन्हें कठिन संघर्ष के बचाकर रखना चाहिए।

इतिहास में कुछ विलक्षण उदाहरण मिल जाएंगे जिनमें सबसे ऊपर महात्मा गांधी हैं। उन्होंने जब असहयोग आंदोलन शुरू किया तो उनकी उम्र पचास वर्ष थी। जब नमक आंदोलन आरंभ किया तो वे साठ वर्ष के थे और जब भारत छोड़ो आंदोलन छेड़ा तो वे 72 वर्ष के थे। जब उन्होंने कलकत्ता की सांप्रदायिक हिंसा रोकने के लिए अनशन किया तब उनकी उम्र 77 वर्ष थी। इसी तरह जब आचार्य नरेंद्र देव भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए तो उनकी उम्र 53 वर्ष थी। लेकिन यहां इतिहास में एक अद्भुत साम्य देखने को मिलता है और वह है गांधी और जेपी में।

जेपी ने जब चौहत्तर का आंदोलन छेड़ा और संपूर्ण क्रांति का नारा दिया तो उनकी उम्र भी गांधी की तरह 72 साल की थी। जिस तरह गांधी को उस उम्र में तमाम लोगों ने बड़ा आंदोलन छेड़ने से मना किया था वैसे ही जेपी को भी मना करने वाले थे। लेकिन उन्हें अपने स्वास्थ्य की बजाय देश और मानवता के स्वास्थ्य की चिंता थी और वे संघर्ष में उतरे।

फोटो स्रोत : गूगल

आज के समाजवादी संघर्ष और रचना को गति और ऊर्जा देने के लिए दो पुस्तकों का जिक्र बेहद जरूरी है। एक है यू आर अनंतमूर्ति की पुस्तक ` हिंदुत्व आर हिंद स्वराज' और दूसरी है नंद किशोर आचार्य की पुस्तक ` अहिंसक समाजवाद'। संयोग से वे दोनों लेखक समाजवादी ही हैं। यू आर अनंतमूर्ति मूलतः कन्नड़ लेखक और साहित्यकार थे लेकिन उनकी गणना विश्व के महान लेखकों में होती है। जबकि नंद किशोर आचार्य साहित्य और राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में अपने अनुपम योगदान देने के लिए जाने जाते हैं और आज भी अहिंसक शांति ग्रंथमाला के माध्यम से समाजवाद के वैश्विक और भारतीय स्वरूप को गांधीवाद से जोड़कर नई व्याख्या कर रहे हैं।

यू आर अनंतमूर्ति अपनी समाजवादी पहचान को आज के पत्रकारों, लेखकों और बौद्धिकों की तरह से गुप्त नहीं रखते थे। जब 2010 में दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में साहित्य अकादमी की ओर से हम लोग लोहिया जन्मशती वर्ष मना रहे थे तो उद्घाटन सत्र में मंच पर उनका पहला वाक्य यही था कि आई एम लोहियाइट (मैं लोहियावादी हूं)। वे 2013 में हो रहे परिवर्तनों को देखकर निराश हो चले थे। उन्होंने कहा था कि वे उस देश में नहीं रहना चाहते जहां नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री होंगे। उसी के प्रतिकार में उनका लंबा निबंध है उपर्युक्त

फोटो स्रोत : गूगल

पुस्तक।

इस पुस्तक में उन्होंने कहा है कि विनायक दामोदर सावरकर की जो हिंसा नाथूराम गोडसे में दिखी वही प्रवृत्तियां नरेंद्र मोदी में दिखाई पड़ रही हैं। उनके बयान के बाद विहिप के नेता गिरिराज किशोर ने कहा था कि अगर अनंतमूर्ति को मोदी वाले देश में नहीं रहना है तो वे पाकिस्तान चले जाएं। खैर ऐसी नौबत नहीं आई और 22 अगस्त 2014 को उनका निधन हो गया। लेकिन उनका लंबा निबंध साफ शब्दों में कहता है कि हिंदुत्व की जिस विचारधारा से लैस होकर भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चल रहे हैं उसके पीछे दरअसल यूरोपीय राष्ट्र राज्य का हिंसक दर्शन है।

वह दर्शन दो विश्व युद्ध झेल कर आज भले नागरिक अधिकारों का रखवाला बनने का दावा कर रहा है लेकिन उसने दूसरे विश्व युद्ध से पहले फासीवादी और नाजीवादी सत्ताओं का उदय देखा है और मुसोलिनी और हिटलर जैसे शासकों की नीतियों का कहर देखा है। लेकिन यूरोप के जो देश हिटलर और मुसोलिनी से लड़ रहे थे वे भी अपने देश की सीमाओं से बाहर एशिया, अफ्रीका और अमेरिकी महाद्वीप के देशों के साथ वही बर्ताव कर रहे थे जो हिटलर और मुसोलिनी अपने नागरिकों के साथ कर रहे थे।

वह दर्शन दो विश्व युद्ध झेल कर आज भले नागरिक अधिकारों का रखवाला बनने का दावा कर रहा है लेकिन उसने दूसरे विश्व युद्ध से पहले फासीवादी और नाजीवादी सत्ताओं का उदय देखा है और मुसोलिनी और हिटलर जैसे शासकों की नीतियों का कहर देखा है। यूरोप के देश हिटलर और मुसोलिनी से लड़ रहे थे

अनंतमूर्ति ने बहुत साफ शब्दों में लिखा है कि हिंदुत्व की विचारधारा एक नस्लवादी और घृणा पर आधारित विचारधारा है। इसमें धार्मिक तत्व नहीं है बल्कि धर्म का मर्दवादी इस्तेमाल है। सावरकर एक नास्तिक व्यक्ति थे जिनका गोरक्षा वगैरह से कोई लेना देना नहीं था। बल्कि उन्हें गोकशी से भी आपत्ति नहीं थी। उनका कहना था कि भारत में बाहर से आने वाली सभी जातियां घुल मिल गईं लेकिन इस्लाम धर्म नहीं मिल पाया। इसकी वजह साफ है कि उसे मानने वालों की पितृभू

तो भारत हो सकता है लेकिन उनकी पुण्यभू कहीं और है। उन्होंने इसलिए मातृभूमि को पितृभू में बदल दिया।

उनके ठीक विपरीत गांधी एक आस्तिक व्यक्ति थे। वे सभी धर्मों की मूलभूत एकता में विश्वास करते थे। वे भारत में एक ऐसे राज्य की स्थापना करना चाहते थे जो यूरोपीय राज्य के उद्भव और विकास से अलग हो। उनका मानना था कि भारत में समाज का महत्त्व राज्य से अधिक रहा है। इसी क्रम में वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा को स्वराज का अहम हिस्सा मानते थे। गांधी का राज्य न तो पूंजीपतियों का दास था और न ही बहुसंख्यक समाज का। वह व्यक्ति की आजादी के आगे नतमस्तक होने वाला था और अल्पसंख्यक धर्म के लिए उतना ही सम्मान रखता था जितना कि बहुसंख्यक धर्म के लिए। गांधी की नागरिक अवधारणा अभय थी जो न तो किसी को भयभीत करे और न ही किसी से भयभीत हो। वह न तो राज्य से भयभीत होता था और न ही व्यक्ति से।

भारतीय समाजवादियों ने गांधी की इसी सत्य और अहिंसा की धारणा से प्रेरित होकर अपने दर्शन को नया रूप दिया। भारतीय समाजवादी पहले गांधी से प्रभावित थे और उनके नेतृत्व को स्वीकार करते थे। वे उनके नेतृत्व को कम्युनिस्टों की तरह से आलोचना का मुद्दा नहीं बनाते थे लेकिन पूरी तरह से सहमत भी नहीं थे। 1948 में जब सोशलिस्ट पार्टी बनी तो उन्होंने गांधी के सविनय अवज्ञा के सिद्धांत को पूरी तरह से स्वीकार किया। लेकिन यह मामला एकतरफा नहीं था। गांधी ने भी समाजवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया था। इसलिए आजादी के करीब आने के साथ ही गांधी समाजवाद के करीब आ रहे थे और उसमें अपने अहिंसा के दर्शन को अनुप्राणित कर रहे थे।

गांधी ने कहा है, “पश्चिम की समाजवादी धारणा का जन्म हिंसा के वातावरण में हुआ था। पश्चिम और पूर्व के समाजवाद के पीछे मंतव्य एक ही है : संपूर्ण समाज का अधिकतम कल्याण और उन भयंकर असमानताओं का उन्मूलन जिनके

भारतीय समाजवादियों ने गांधी की इसी सत्य और अहिंसा की धारणा से प्रेरित होकर अपने दर्शन को नया रूप दिया। भारतीय समाजवादी पहले गांधी से प्रभावित थे और उनके नेतृत्व को स्वीकार करते थे। वे उनके नेतृत्व को कम्युनिस्टों की तरह से आलोचना का मुद्दा नहीं बनाते थे लेकिन पूरी तरह से सहमत भी नहीं थे

परिणामस्वरूप लाखों-करोड़ों लोग निर्धन हैं और मुट्ठी भर लोग धनी हैं। मेरा विश्वास है कि इस ध्येय की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब दुनिया के प्रखरतम बुद्धि वाले लोग अहिंसा को न्यायोचित सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का आधार मान लें।”

डॉ. राम मनोहर लोहिया की सप्त क्रांति और जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की अवधारणा दरअसल अहिंसक समाजवाद की स्थापना का ही दर्शन है। भारतीय समाजवादियों ने मान लिया था कि समता, स्वाधीनता और समृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने में भारतीय संस्कृति की सही समझ बाधक नहीं बल्कि सहायक हो सकती है। यहीं पर सही समझ का विकास बेहद जरूरी है। इसलिए यह ध्यान रखना होगा कि हिंदुत्व की विचारधारा का भारतीय संस्कृति से लेना देना नहीं है। वह यूरोप की हिंसा और नफरत पर आधारित एक विचारधारा को भारतीय जमीन पर रोपने का प्रयास है। उसके भीतर धर्म और अध्यात्म की बजाय धर्म के दुरुपयोग का सिद्धांत है।

यह सही है कि सावरकर के हिंदुत्व में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अपनी कुछ बातों को मिलाया है लेकिन उसका मूल तत्व विदेशी प्रणाली पर आधारित हिंसक राज्य की स्थापना ही है जो स्वयं नागरिकों से भयभीत रहे और फिर नागरिकों को निरंतर भय में डाले रहे। जहां तर्क और बहस की बजाय कुतर्क और झगड़े की गुंजाइश ज्यादा हो।

आचार्य नरेंद्र देव ने लिखा है, “हमारी प्राचीन संस्कृति नवीन व्यवस्था की स्थापना में सर्वथा बाधक न होकर अनेक अंशों में साधक है। मानव मात्र की एकता, वसुधैव कुटुम्बकम का आदर्श इस देश में बहुत पुराना है। वस्तुतः जो कार्य श्रमण धर्म ने आध्यात्मिक क्षेत्र में मानव की एकता को स्वीकार करते हुए किया था वही कार्य भौतिक क्षेत्र में समाजवाद को स्वीकार करके हमें करना है।”

डा. राममनोहर लोहिया ने भारतीय परंपरा से जोड़ते हुए आंतरिक समता की बात की है। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि

फोटो स्रोत : गूगल

आंतरिक समानता के सिद्धांत को आधुनिक मानव ने भुला दिया है। वे कहते हैं, "ऐसा लगता है कि हमारे प्राचीन मनीषियों ने आंतरिक स्थितप्रज्ञता और बाहरी समानता को एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में जान लिया था। क्योंकि भारतीय भाषाओं में दोनों अर्थों के लिए एक ही शब्द समता और समत्व का प्रयोग हुआ है। वे मानते हैं कि समानता को आंतरिक और बाह्य, आध्यात्मिक और भौतिक चारों अर्थों में ग्रहण करना चाहिए।"

यहां यह जानना रोचक है कि विनोबा के दर्शन को सर्वोदय दर्शन के रूप में देखा जाता है। जबकि वे खुद अपने दर्शन को साम्य योग कहते हैं। वे उसे प्राप्त करने के लिए सत्याग्रह की पद्धति अपनाने का सुझाव देते हैं। इसलिए वे हिंसक प्रक्रिया से निर्मित समाजवाद को तामसिक, राज्य शक्ति से निर्मित समाजवाद को राजसिक और अहिंसक प्रक्रिया से निर्मित समाजवाद को सात्विक समाजवाद कहते हैं। विनोबा आध्यात्मिक पंचनिष्ठा का सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं और कहते हैं कि तमाम मानव सभ्यता को अध्यात्म और विज्ञान की बड़ी जरूरत है। आखिर में यही दोनों बचेंगे। इसलिए अहिंसक समाजवाद के विमर्श को व्यापक और तीव्र करके ही मौजूदा सर्वसत्तावाद और बहुसंख्यकवाद के खतरे से बचा जा सकता है। हिंसा से बचा जा सकता है और एक नए समाज का निर्माण किया जा सकता है। आजादी के अमृत महोत्सव के इस मौके पर समाजवादियों को न सिर्फ उनके स्वाधीनता संग्राम में किए गए महान संघर्ष को याद करना चाहिए बल्कि भारत छोड़ो आंदोलन के सत्तर साल के संघर्ष और उसमें विशिष्ट भूमिका का स्मरण भी जरूरी है।

यह वर्ष महान समाजवादी नेता और विचारक मधु लिमए का जन्मशती वर्ष है। वे स्वतंत्रता संग्राम में 17 साल की उम्र में ही कूद पड़े थे। उन्होंने 8 अगस्त 1942 को बंबई के गवालिया टैंक मैदान में महात्मा गांधी को करीब से सुना और देखा था। वे 1955 में गोवा मुक्ति आंदोलन में खास सत्याग्रही के तौर पर कठोर यातना के भागी बने। वे महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के बावजूद आजीवन दलितों और पिछड़ों के लिए लड़ते रहे। उन्हें बिहार से चार बार लोकसभा के लिए चुना गया। लेकिन उन्होंने 1963 में डा. लोहिया को जनसंघ के साथ हाथ मिलाने से आगाह किया था।

1979 में जनता पार्टी के नेता के तौर पर उन्होंने दोहरी सदस्यता के सवाल पर जनसंघ के लोगों के दोगले व्यवहार से ऊब कर सरकार गिरा दी थी। उनका नैतिक जीवन और वैचारिक लेखन हमारी युवा पीढ़ी के लिए उसी तरह से प्रेरणादायी बन सकता है जैसे आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, डा. लोहिया, एसएम जोशी, युसूफ मेहरअली और किशन पटनायक जैसे समाजवादियों का जीवन रहा है। समाजवाद के बीज को नए सिरे से देश भर में बोने और छींटने की जरूरत है। उसकी पौध को इस बारिश में फिर से रोपने की जरूरत है और जो फसलें रोपी जा चुकी हैं उनके बीच से जातिवाद, सांप्रदायिकता और पूंजीवाद के खरपतवार को निकाल कर उसे खाद पानी देने की जरूरत है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

सदस्यता अभियान: फोटो फीचर

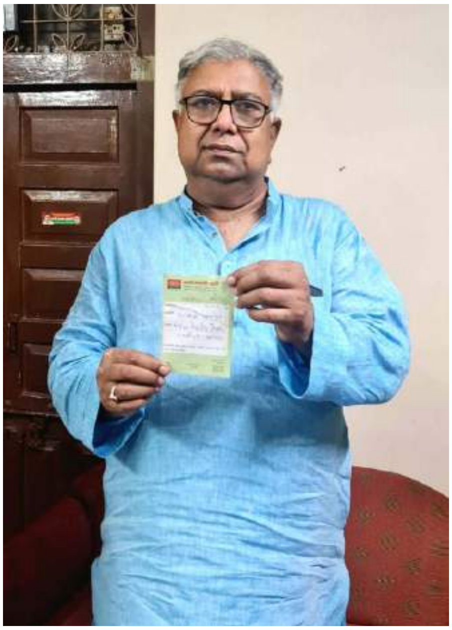

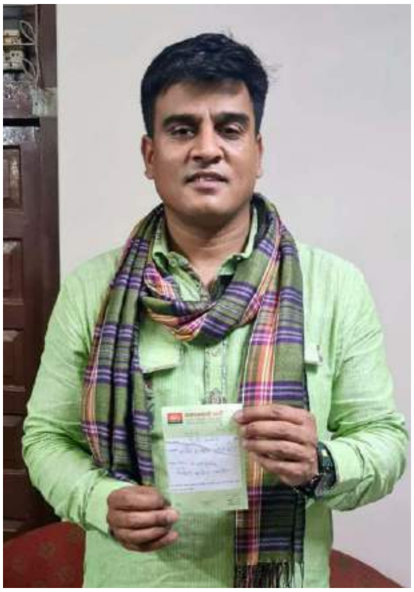

कार्यालय - 392 विधानसभा

मेधा का सम्मान

बोर्ड परीक्षा के टॉपरों को मिला लैपटॉप

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने दिनांक 1 जुलाई को समाजवादी पार्टी राज्य मुख्यालय, लखनऊ में यूपी बोर्ड की 10वीं एवं 12वीं परीक्षा में शीर्ष 5 स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को लैपटॉप देकर सम्मानित किया।

सम्मानित होने वाले छात्र-छात्राओं में 10वीं के टॉपर सर्वश्री प्रिंस पटेल, किरन कुशवाहा, पलक अवस्थी, नैन्सी वर्मा, प्रान्शी द्विवेदी सभी (कानपुर), आस्था सिंह (प्रयागराज), एकता वर्मा (सीतापुर), अथर्व श्रीवास्तव (मुरादाबाद) और अनिकेत शर्मा (कन्नौज) शामिल रहे। इंटरमीडिएट के टॉपर में अंशिका यादव, जिया मिश्रा एवं आंचल यादव (प्रयागराज), बालकृष्ण एवं दिव्यांशी (फतेहपुर), योगेश प्रताप सिंह एवं अभिमन्यू वर्मा (बाराबंकी) प्रखर पाठक (कानपुर नगर), जतिन राज (मुरादाबाद), स्वाती गोस्वामी (लखनऊ) एवं श्रेया सोनी (सुल्तानपुर) शामिल रहे।

इसके अतिरिक्त कन्नौज के हाईस्कूल टॉपर सर्वश्री अनिकेत शर्मा, स्वप्निल, प्रिया एवं उत्कर्ष पाल और इंटरमीडिएट के टॉपर सुश्री आस्था, पल्लवी अवस्थी एवं हरवंश को भी लैपटॉप देकर सम्मानित किया गया।

पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने टॉपर छात्र-छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मुझे उम्मीद है कि आप लोग अपने सपनों को पूरा करेंगे। जीवन में मेहनत करने वाला ही सफल होता है। जिसका रास्ता साफ सुथरा होता है वही आगे बढ़ता है। सरकार नहीं है इसलिए कुछ ही बच्चों को लैपटॉप दिया गया है। सरकार को याद दिलाने के लिये ही लैपटॉप दिया गया है। उन्होंने कहा भाजपा सरकार ने अपने संकल्प पत्रों में लैपटॉप देने व आईटी सेक्टर हेतु जो घोषणा की थी उसे पूरा करे।

अखिलेश जी का जन्मदिन

समाजवाद को मजबूत करने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का 49वां जन्मदिन एक जुलाई 2022 को राजधानी लखनऊ सहित पूरे प्रदेश और अन्य राज्यों में भी पार्टी कार्यकर्ताओं ने स्वतःस्फूर्त ढंग से हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में मनाया और समाजवादी विचारधारा को मजबूत करने का संकल्प लिया। श्री अखिलेश यादव ने अपने प्रति स्नेह प्रदर्शन के लिए सभी का आभार जताया।

श्री अखिलेश यादव के जन्मदिन पर प्रातः से ही समाजवादी पार्टी कार्यालय, लखनऊ में हजारों कार्यकर्ताओं की भीड़ उमड़ पड़ी। प्रदेश के तमाम जनपदों में अनेक स्थानों पर केक काटा गया, वृक्षारोपण, मिष्ठान्न वितरण के साथ गरीबों को अन्नदान, भोजन वितरण तथा अस्पतालों में मरीजों को फल बांटे गए। श्री यादव की दीर्घायु के लिए हवन-पूजन, भण्डारा किया गया।

समाजवादी पार्टी कार्यालय में समाज के हर वर्ग के लोगों ने श्री यादव से मिलकर उन्हें बधाई दी। श्री अखिलेश यादव को

पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र, मूर्तियों के उपहार भेंट किए गए। पंडित हरिप्रसाद मिश्र ने मंत्रोच्चार के साथ कलावा बांधकर श्री यादव को यशस्वी और दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। पूर्व विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री पवन पाण्डेय के साथ अयोध्या से आए महंत सर्वश्री रामदास करतलिया बाबा, विनोददास सुग्रीव आश्रम, आनन्द दास हनुमान गढ़, कन्हैया दास श्री राम धाम आश्रम, धरम दास खाक चौक तथा आचार्य महेश चन्द्र ने श्री यादव को उज्जल भविष्य का आशीर्वाद दिया। पूर्व सांसद एवं कवि श्री उदय प्रताप सिंह ने भी श्री यादव को आशीर्वाद दिया।

श्री अखिलेश यादव के जन्मदिन पर समाजवादी पार्टी कार्यालय में केक काटा गया। इस मौके पर सर्वश्री राजेन्द्र चौधरी, नरेश उत्तम पटेल, डॉ. राजपाल कश्यप, अरविन्द कुमार सिंह, प्रदीप यादव, व्यासजी गौड़, नेहा यादव, विकास यादव, उपस्थित रहे। श्री देवेन्द्र सिंह जीतू पार्षद, श्री नवीन धवन बंटी ने भंडारा किया।

डॉ. राजपाल कश्यप, पूर्व विधायक ने चंदन का वृक्ष अखिलेश जी को भेंट किया। नेहा यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी छात्र सभा ने बादाम और जामुन के दो वृक्ष भेंट किए। लखनऊ उत्तरी विधानसभा क्षेत्र की पूर्व प्रत्याशी सुश्री पूजा शुक्ला ने श्री अखिलेश यादव को गीता भेंट किया चंदौसी में श्री दाताराम भारती, विमल चौधरी ने एक कुंटल मिठाई वितरित की। चित्रकूट में रानी साहब रेमा श्रीवास्तव एवं डॉ. निर्भय सिंह पटेल ने कामता नाथ मंदिर में पूजा-अर्चना कर श्री अखिलेश यादव के दीर्घ जीवन तथा उज्जवल भविष्य की कामना की।
समाजवादी पार्टी केरल के अध्यक्ष डॉ.

एस. पोथेन थॉमस ने अंगवस्त्र पहनाकर सम्मान किया। तमिलनाडु के कार्यकर्ताओं ने भी पारम्परिक अंगवस्त्र, मुकुट और फूलों का हार पहनाया। आंध्र प्रदेश के श्री अरुण यादव, के आर कोटिस्वरा यादव ने पारम्परिक अंगवस्त्र और काजू की माला पहनाने के साथ तिरूपति बालाजी मन्दिर में अखिलेश जी के जन्मदिन के लिए चढ़ाया गया प्रसाद दिया।

सहारनपुर के विधायक श्री आशु मलिक ने सामूहिक विवाह समारोह आयोजित कर

21 पुत्रियों का विवाह संस्कार कराया। श्री मलिक ने इस अवसर पर केक काटा और उपस्थित लोगों का मुंह मीठा कराया। इस अवसर पर पूर्व विधायक एवं व्यापार सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री संजय गर्ग भी उपस्थित थे।

श्री अखिलेश यादव ने वीडियों कांफ्रेसिंग के जरिए श्री मलिक को सामूहिक विवाह के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। जिन जोड़ो की शादी हुई है उनको बधाई दी तथा वैवाहिक जीवन की सफलता की शुभकामना की। श्री मलिक ने श्री यादव को जन्मदिन की हार्दिक बधाई देते हुए दीर्घायु की कामना की।

अन्य राज्यों में भी श्री अखिलेश यादव का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। आन्ध्र प्रदेश के गुंटूर में केक काट कर बधाई दी गई। समाजवादी महिला सभा राजस्थान की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती वंदना यादव ने भी बधाई दी है। उत्तराखंड में समाजवादी पार्टी कार्यालय में केक काटकर जन्मदिन मनाया गया। प्रदेश अध्यक्ष श्री सत्य नारायण सचान, अतुल शर्मा एवं अन्य पदाधिकारियों ने इसे संकल्प दिवस के रूप में मनाया। ऋषिकेश में श्री अतुल यादव सहित अन्य लोगों ने केक काटकर जन्मदिन मनाया।

जनता पर महंगाई की बेरहम मार

बुलेटिन ब्यूरो

बहुत हुई महंगाई की मार, अबकी बार भाजपा सरकार' का नारा देकर सत्ता में आयी भाजपा सरकार ने महंगाई की बेरहम मार से जनता का जीवन मुश्किल में डाल दिया है, लेकिन भाजपा की डबल इंजन सरकार के कान में जूं तक नहीं रेंग रही है। महंगाई आम आदमी की कमाई खा गई है। भाजपा राज में इसे खुली छूट है।

यूपी में भाजपा सरकार के 100 दिन पूरे होने पर जनता को महंगाई का जानलेवा उपहार मिल गया है। महंगाई की आग में जलाने के लिए भाजपा सरकार ने रसोई गैस से लेकर आटा-दाल तक के दाम बढ़ा दिए हैं। सबका साथ वाली भाजपा अब सबको भय, भ्रष्टाचार और महंगाई की मार देकर साथ रहने को मजबूर करने की रणनीति पर काम करने लगी है।

ऑयल मार्केटिंग कम्पनियों ने घरेलू

14.2 केजी एलपीजी सिलेण्डर के दाम 50 रुपए तक बढ़ा दिए हैं। 5 केजी घरेलू सिलेण्डर के दाम 18 रुपए प्रति सिलेण्डर बढ़ गए हैं।

जीएसटी काउंसिल की बैठक में नानब्रांडेड आटा, दाल और अनाज पर भी 5 प्रतिशत जीएसटी लगाने का फैसला कर लिया है। इसका सीधा असर आम आदमी की जेब पर पड़ना तय है। इस फैसले से गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों की कमर टूटना तय है। जीएसटी काउंसिल के ताजा फैसले से हर वस्तु के दाम 2 से 5 रुपए प्रति किलो तक बढ़ जाएंगे।

भाजपा सरकार ने पेट्रोल-डीजल के दामों में लगातार बढ़ोत्तरी करके लोगों की परेशानियां बढ़ाई हैं। किसान की खेती की लागत बढ़ी है। परिवहन महंगा होने से खाद्य पदार्थ, फल सब्जी, अनाज तथा अन्य घरेलू उपयोग की वस्तुओं के दाम स्वतः बढ़ गए हैं। इसके अतिरिक्त एलईडी, लैंप, पंखो आदि पर 18 प्रतिशत जीएसटी देनी पड़ेगी।

बड़े पूंजीघराने मुनाफा कमाने की होड़ में गरीब का शोषण करने में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। सब्जियां महंगी, अमूल के बाद पराग ने भी दही-मट्ठा के दाम बढ़ा दिए हैं। दूध, दही, पनीर और आटा तक पर जीएसटी लगा दी गई है। रसोई गैस के दाम आसमान छू रहे हैं। यह जेब पर डाका है।

महंगाई की मार से जनता की बुरी हालत है। जनता जितनी परेशानी में है हुक्मरान उतने ही बेफिक्र दिखाई दे रहे हैं। गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों का बुरा हाल है। घरेलू अर्थव्यवस्था चौपट है लेकिन भाजपा सरकार की संवेदनहीनता कम होने का नाम नहीं ले रही है।

भाजपा सरकार में एक डालर के मुकाबले रुपया 8 0 के पार हो गया है इससे अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ रहा है। बढ़ती महंगाई के कारण विदेशों में पढ़ाना, विदेश यात्रा करना सब मुश्किल हो गया है। खाद, बीज, कृषि यंत्र सभी महंगे हैं। मोबाइल, कार खरीदना महंगा हो गया है। व्यापार घाटा बढ़ गया है। आयात महंगा हो जाने से देश की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो गई है।

जीएसटी काउंसिल की बैठक में नानब्रांडेड आटा, दाल और अनाज पर भी 5 प्रतिशत जीएसटी लगाने का फैसला कर लिया है। इसका सीधा असर आम आदमी की जेब पर पड़ना तय है। इस फैसले से गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों की कमर टूटना तय है

भाजपा सरकार ने पौष्टिक आहार पर जीएसटी की दरें बढ़ाकर आम जनता को प्रताड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भाजपा सरकार पैकेज्ड और लेबल वाली दही, लस्सी, पनीर, शहद, मांस, मछली सहित आटा चक्की, दाल, चीनी, एलईडी लैंप और लाईट्स के साथ होटल के कमरे आदि सभी पर जीएसटी दरें बढ़ाकर जनजीवन मुश्किल बनाकर जनता का शोषण कर रही है।

महंगाई की तपिश से परेशान लोगों का जिस तेजी से बजट बढ़ा है, उस अनुपात में आय नहीं बढ़ी है। इससे लोगों की घरेलू अर्थव्यवस्था बिगड़ गयी है। इस भीषण महंगाई में जीवनयापन करना मुश्किल हो गया है। महीने के राशन का खर्च लगभग 100 फीसदी बढ़ गया है। बैंकों ने लोन पर ब्याज की दरें बढ़ा दी है। भाजपा सरकार की आर्थिक नीतियां इसकी जिम्मेदार हैं। भाजपा ने गरीबों, मध्यमवर्ग को राहत देने के बजाय बड़े पूंजीघरानों को तमाम रियायतें देने का काम अब तक किया है।

भाजपा सरकार को गरीबों की खुशी बर्दाश्त नहीं। शादी ब्याह और दूसरे पारिवारिक उत्सवों के लिए लोग आवास विकास परिषद के सामुदायिक केंद्रों का उपयोग कर लेते हैं सरकार इन्हें निजी हाथों में सौंप कर ठेकेदारों को मालामाल करने का इरादा कर लिया है।

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बारिश की कमी ने सूखे की आशंका पैदा कर दी है। किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें हैं। बारिश न होने से खरीफ की बोआई रुकी हुई है। सरकार के कथित पौधारोपण अभियान पर भी सूखे का साया मंडराने लगा है। लगभग पूरे प्रदेश में स्थिति काफी चिंताजनक है।

वस्तुतः भाजपा सरकार को जनता के सुख-दुःख की कोई चिंता नहीं। भाजपा सरकार की गलत आर्थिक नीतियों ने प्रदेश और देश में संकट पैदा किया है। महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार ने लोगो को तबाह कर दिया है। गरीब, किसान, नौजवान आत्महत्या करने पर मजबूर है।

...तो किसने शुरू किया रेवड़ी कल्चर!

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि रेवड़ी कल्चर देश के लिए ख़तरनाक साबित हो रहा है। मगर, रेवड़ी कल्चर इस देश में लाया किसने?

2021 तक 10.72 लाख करोड़ रुपये के बैड लोन माफ कर दिए गये। 10.72 लाख की रेवड़ी किन्हें बांटी गयी? - उन उद्योगपतियों को जिन्होंने जनता का धन बैंक से बतौर कर्ज लिया और पचा गये।

फोर्ब्स के मुताबिक साल 2017 में गौतम अडानी की कुल संपत्ति 5.8 अरब डॉलर थी। दुनिया में अमीरों की सूची में उनकी रैंकिंग 250 थी। 15 अप्रैल 2022 को गौतम अडानी की संपत्ति 120 अरब डॉलर हो गयी और अमीरों के बीच उनकी रैंकिंग 6ठी हो गयी। महज पांच साल में दौलत में बीस गुणा से ज्यादा का इजाफा हुआ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेवड़ी बांटे जाने की बात जिस बुंदेलखण्ड एक्सप्रेस वे को हरी झंडी दिखाते हुए 16 जुलाई को की, पांच दिन बाद ही पहली बारिश में उस एक्सप्रेस वे पर जगह-जगह गड्ढे बन गये। आखिर बुंदेलखण्ड एक्सप्रेस वे के नाम 15 हजार करोड़ की रकम वाली रेवड़ी किसने बांटी?

रेवड़ी-रेवड़ी क्या है...ये रेवड़ी-रेवड़ी?

अखिलेश यादव ने तुरंत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मुंहतोड़ जवाब दिया। अखिलेश ने ट्वीट किया- " रेवड़ी बांटकर थैंक्यू का अभियान चलवाने वाले सत्ताधारी अगर युवाओं को रोजगार दें तो वो 'दोषारोपण संस्कृति' संस्कृति से बच सकते हैं। रेवड़ी शब्द असंसदीय तो नहीं?"

अखिलेश ने अपने ट्वीट से तीन सवाल उठाए- एक- रेवड़ी बांटने का काम बीजेपी ने किया है, दूसरा- युवाओं को रोजगार देने के वायदे से बीजेपी हटी है और तीसरा- प्रधानमंत्री दोषारोपण संस्कृति ला रहे हैं।

रेवड़ी बांटने की बात समझने-समझाने की कोशिश में नरेंद्र मोदी को अखिलेश यादव के जवाब को समझना भी बहुत जरूरी है। अखिलेश कहते हैं कि रेवड़ी बांटने का काम नरेंद्र मोदी की सरकार ने शुरू की। वहीं, दूसरा बड़ा मुद्दा है कि रोज़गार देने के वायदे से बीजेपी हटी है। हर साल 2 करोड़ रोज़गार के वादों की परख करनी हो तो ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट चौंकाने वाली है।

फिर रेवड़ी कौन खा रहा?

रिपोर्ट में कहा गया है कि 45 करोड़ लोगों ने निराश होकर नौकरी से दूर रहने का फैसला कर लिया है। जाहिर है इनके पास न अनाज है और न ही निराश हो चुके इस वर्ग के पास ऐसी कोई क्रय शक्ति है जिससे वे महंगाई का मुकाबला कर सकें।

यूपीए के शासनकाल में 27 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठे थे। मगर, एनडीए के शासनकाल में गरीबी रेखा से ऊपर उठने की बात तो छोड़ दीजिए, मध्यम वर्ग के लोगों में अब गरीबी रेखा के नीचे जाने की होड़ लगी है।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी का अध्ययन कहता है- "योग्यता के अनुसार काम नहीं मिल रहा है। देश की आबादी के हिसाब से 2017 से 2022 के बीच कामगारों की कुल संख्या 46 प्रतिशत से घटकर 40 प्रतिशत रह गयी है।"

कर्ज बढ़ा आमदनी घटी

दो बातों पर गौर करते हैं- एक देश पर बढ़ता विदेशी कर्ज और दूसरा गरीबों की घटती आमदनी। मोदी सरकार ने वादे के विपरीत विदेश से कर्ज लेना न सिर्फ जारी रखा बल्कि उसे उच्चतम स्तर पर पहुंचाया। वहीं गरीब परिवारों की आमदनी में बढ़ोतरी का सिलसिला मोदी सरकार ने तोड़ दिया। बढ़ने के बजाए गरीब परिवारों की आमदनी घटने लगी।

ऐसे में यह सवाल जरूर उठता है कि विदेश से लिए गये कर्ज का यानी हर भारतीय को कर्जदार बनाने का फायदा किसे मिले? गरीबों को तो कतई नहीं। यहा फायदा अंबानी-अडानी जैसे उद्योगपतियों को ही मिला या फिर संपन्न तबके को जिसकी आमदनी घटी नहीं, बल्कि बढ़ी।

वित्त मंत्रालय की ओर से 31 मार्च 2022 को उपलब्ध करायी गयी जानकारी के मुताबिक भारत ने विदेशी स्रोतों से जो कर्ज लिया है वह 614.9 अरब डॉलर पहुंच गया है।

यह रकम गौतम अडानी की दौलत से तीन गुणा से थोड़ा ज्यादा है। रुपये में बात करें तो जहां 2013 में विदेशी कर्ज 31 लाख करोड़ था, वह 2021 में बढ़कर 43.32 लाख करोड़ रुपये हो चुका है।

मुंबई स्थित पीपुल्स रिसर्च ऑन इंडियाज कंज्यूमर इकॉनमी के सर्वे के मुताबिक 2015-16 में सबसे गरीब 20 प्रतिशत परिवारों की औसत सालाना आय 1.37 लाख रुपये थी जो 2020-21 में गिरकर आधे से भी कम 65 हजार रुपये हो गयी।

खास बात यह है कि इन परिवारों की आय 2005 से 2016 के बीच 183 प्रतिशत बढ़ी थी।

बदतर हो रहा है जीवन

आने वाली पीढ़ियों पर हम कर्ज थोपते चले जा रहे हैं। सिर्फ कर्ज ही नहीं गरीबी भी थोप रहे हैं। घटती आमदनी और बढ़ते कर्ज के बीच आम लोगों का जीवन बदतर होता चला जा रहा है। इससे बेफिक्र सरकार जीएसटी के जरिए वसूली बढ़ाकर इतरा रही है। अप्रैल 2020 में 1.67 लाख करोड़ की वसूली और अप्रैल के बाद से लगातार 1.40 लाख करोड़ से अधिक की जीएसटी वसूली को मोदी सरकार उपलब्धि बता रही है। जबकि, सच यह है कि गरीब और मजबूर होती आबादी पर यह मोदी सरकार का करारा प्रहार है।

जीएसटी कलेक्शन पर राज्य सरकारें भी नहीं बोल रही हैं। एक कारण तो यह है कि ज्यादातर सरकारों में बीजेपी या एनडीए की सरकार है। इस वजह से राज्य और केंद्र सरकार के बीच नूराकुश्ती का खेल चल रहा है। दूसरा कारण यह है कि जीएसटी कलेक्शन के बाद राज्य को हिस्सेदारी मिलती है। इस तरह जीएसटी को थोपा जा रहा है। जीएसटी को लेकर जो ताजा फैसले हुए हैं उसके मुताबिक आम जरूरतों की चीजों को भी जीएसटी के दायरे में लाया जा चुका है। यह आम लोगों पर कहर बनकर टूट पड़ने वाला है। ऐसे में पहले महंगाई की मार झेलती जनता जिसके पास इससे निपटने का कोई साधन नहीं है, उस पर जीएसटी की मार क्या वे लोग झेल पाएंगे? डालते हैं एक नज़र जीएसटी की नयी दरों पर-

5% जीएसटी

25 किलो तक के पैकेट बंद अनाज, दाल, आटा, दही, लस्सी, चूड़ा (पोहा)

नॉन आईसीयू हॉस्पिटल के 5000 रुपये प्रति दिन के कमरों पर 5% जीएसटी।

फोटो स्रोत : गूगल

12% के बजाए 18% जीएसटी

स्याही, चाकू, पेपर काटने वाला चाकू, पेंसिल कटर, ब्लेड, चम्मच, फोर्क, लैडलेस, स्किमर और केक सर्वर।

18% जीएसटी के दायरे में जो आए

एलईडी लैंप, सोलर वाटर हीटर, दूध जैसे द्रव पदार्थों के टेट्रा पैक, डेयरी उत्पाद, बैंक चेकबुक या लूज लीफ चेक, सफाई करने, चुनने या बीज बोने वाले मशीनों और मिल इद्योग में इस्तेमाल होने वाली मशीनों, पवन चक्की, आटा चक्की, भीगा अनाज पिसने वाली मशीनें। पॉलिश किए गये हीरों पर 1.5% जीएसटी लगेगा। पहले यह 0.25% था।

12% जीएसटी

हजार रुपये प्रति दिन वाले होटल के कमरे, मैप, एटलस, ग्लोब।

गरीब कैसे करें गुजारा?

सवाल पूछे जा रहे हैं कि जब कुछ चुनिंदा फिल्मों को टैक्स फ्री कर दिया जाता है तो आम आदमी जिन वस्तुओं को खाकर जिस किसी तरह गुजारा करता है उन्हें कैसे भारी भरकम जीएसटी के दायरे में लाया जा सकता है?

एक तरफ आम जनता पर जीएसटी की मार तो दूसरी तरफ कॉरपोरेट जगत को टैक्स में लगातार छूट! यह बात चौंकाती है। मोदी सरकार आम जनता के साथ है, उनके लिए है या फिर कॉरपोरेट जगत के लिए?- यह सवाल गंभीर हो जाता है। भारत जैसे देश में लगातार कॉरपोरेट टैक्स से वसूली घटती चली जा रही है। खास तौर से कुल टैक्स वसूली में कॉरपोरेट जगत की हिस्सेदारी घटती जा रही है। ऐसा क्यों? महामारी जैसे समय में मुनाफा घटने के बावजूद निजी कंपनियों के मुनाफे में कमी नहीं आयी। उल्टे इसमें बढ़ोतरी हुई। यह आपदा में अवसर का बेहतरीन उदाहरण है।

फोटो स्रोत : गूगल

दोषारोपण की सियासत

अखिलेश यादव ने नरेंद्र मोदी पर दोषारोपण संस्कृति फैलाने का जो आरोप लगाया है वह वास्तव में प्रमाणित हो चुकी बात है। हर बुरी बात के लिए विपक्ष जिम्मेदार होता है और हर अच्छी संभावित बात के लिए मोदी-मोदी के जयकारे लगवाए जाते हैं। कोरोना महामारी के बुरे दौर में ऑक्सीजन सिलेंडर, रेमिडिसिविर जैसी दवाओं के लिए लोग कालाबाजारी का शिकार होते रहे थे, मोदी सरकार खामोश रही। अब महामारी के दो साल बाद वैक्सिनेशन का लक्ष्य हासिल करने का डंका बजाकर मोदी सरकार अपने ही चापलूसों से 'थैंक्यू मोदी' के नारे बुलंद करवा रहे हैं।

मुहावरा है अंधा बांटे रेवड़ी। इस मुहावरे का मतलब होता है कि जब कोई सक्षम हो जाता है तो वह अक्सर अपने ही लोगों को रेवड़ी बांटता है। सवाल यह है कि पूंजीपतियों के पक्ष में सरकार का आंख, कान, नाक बंद करना क्या रेवड़ी बांटना नहीं है? पूंजीपति और बड़े पूंजीपति होते चले जा रहे हैं। वहीं गरीबों की स्थिति दिनों दिन बदतर होती चली जा रही है। ऐसे में नरेंद्र मोदी जो अमीरों को लाभ पहुंचा रहे हैं, वह रेवड़ी है या आम जनता को मुफ्त में राशन आदि देने के नाम पर जो कुछ भी वितरित किया जा रहा है उसे रेवड़ी कहा जाए? बड़ा सवाल यही है कि- अमीरों के लिए रेवड़ी कल्चर गरीबों के लिए क्या?

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

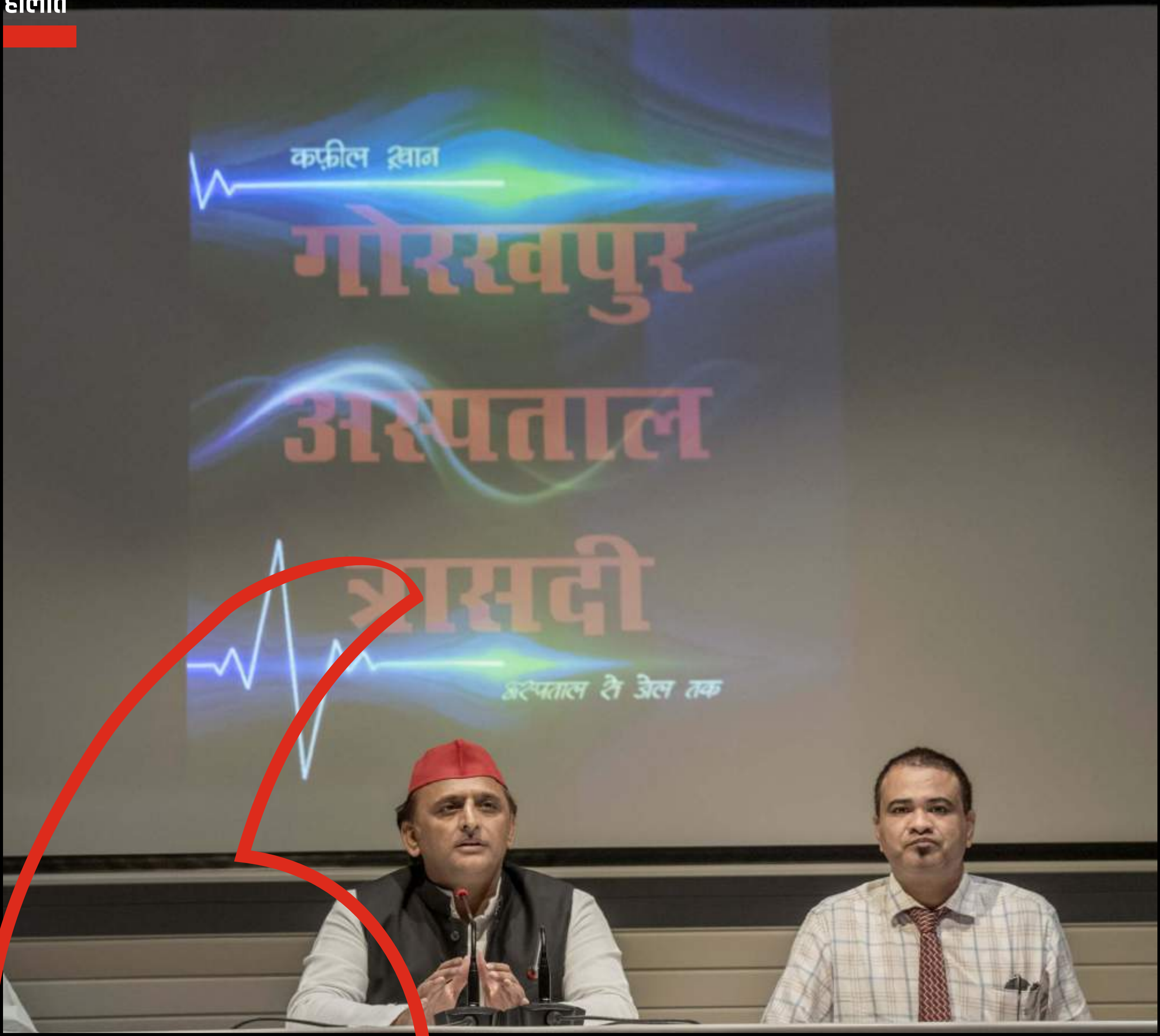

यूपी में स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल हो गई हैं। समाजवादी सरकार के समय बड़े अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में खरीदी गई कीमती मशीनें नहीं चल पा रही हैं। वरिष्ठ डाक्टर मजबूरी में इनसे काम चला रहे हैं। उन्होंने दिनांक 2 जुलाई को समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में डॉ कफील खान की पुस्तक 'गोरखपुर अस्पताल त्रासदी-अस्पताल से जेल तक' का विमोचन करने के अवसर पर अपने संबोधन में ये बातें कहीं। डॉ. कफील ने कहा कि गोरखपुर में 10

अगस्त 2017 को 'मानव नरसंहार' हुआ था जिसकी कहानी इस पुस्तक में है। श्री अखिलेश यादव स्वयं गोरखपुर गए थे और उन्होंने इंसाफ की लड़ाई लड़ी इसलिए इस किताब का विमोचन उनसे ही करने का आग्रह किया।

श्री यादव ने अपने संबोधन में कहा कि यदि भाजपा सरकार समाजवादी सरकार में बने स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को बनाए रखती तो मरीजों की जान से खिलवाड़ नहीं होता। हद तो यह है कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नाम पर बनी मेडिकल यूनिवर्सिटी समाजवादी सरकार के समय बने लोहिया संस्थान के 9वें तल पर चल रही है। अटल जी के नाम की मेडिकल यूनिवर्सिटी भाजपा राज में मूर्तरूप नहीं ले पा रही है। इससे पता चलता है कि भाजपा सरकार अपने नेता और जनता के इलाज के मामले में कितनी गंभीर है।

समाजवादी सरकार में एक रुपए के पर्चे पर मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही थी। गम्भीर बीमारियों किडनी, लीवर, हार्ट, कैंसर की मुफ्त इलाज की व्यवस्था थी। कैंसर अस्पताल बना था। अब इलाज को महंगा कर दिया गया है। गरीबों से मुनाफा कमाया जा रहा है। एम्बुलेंस सेवा 108 और 102 बर्बाद हो गई हैं। मरीजों से इनके लिए पैसे वसूले जा रहे हैं।

श्री यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री जी का दावा है कि स्वास्थ्य सेवाएं जिलास्तर पर भी दी जा रही हैं। यदि जिले के अस्पताल अच्छे हैं तो मरीजों की भीड़ लखनऊ के अस्पतालों में क्यों हो रही है? यहां मरीज दवा, इलाज के बगैर भटक रहे हैं। उनको वक्त पर सही और सस्ता इलाज नहीं मिल पा रहा है। भाजपा ने स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र को बर्बाद कर दिया है। कोरोना काल में तो संक्रमित लोगों को अनाथ छोड़ दिया गया था। ऑक्सीजन के अभाव में तब भी जाने गई थी।

श्री अखिलेश यादव ने डा. कफील खान की पुस्तक का जिक्र करते हुए कहा कि गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में आक्सीजन की कमी से भर्ती बच्चों की सांसे थम गई थी। उस दिन और आगे जो दुःख परेशानी और जेल यातना उन्हें झेलनी पड़ी, डॉ कफील ने अपनी किताब में उसका विवरण दिया है।

श्री यादव ने कहा कि वे खुद पीड़ित परिवारीजनों से मिले थे और उन्हें मदद भी मुहैया कराई थी। अगर उस समय जापानी बुखार से इलाज की पर्याप्त सुविधाएं मिल जाती तो तमाम बच्चों की मौतें नहीं होती।

ज्ञातव्य है, गोरखपुर में जापानी बुखार से हर साल हजारों बच्चों की जिंदगी खत्म हो जाती है। 1978 से अब तक 25000 बच्चे इसके शिकार हो चुके हैं। एक लाख से ज्यादा बच्चे हमेशा के लिए अपाहिज हो चुके हैं। दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चे सबसे ज्यादा इससे प्रभावित होते हैं।

फूलन देवी को श्रद्धांजलि

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ में दिनांक 27 जुलाई को पूर्व सांसद फूलन देवी जी की पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की ओर से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनको नमन किया।

श्री अखिलेश यादव का मानना रहा है कि फूलन देवी जी की कहानी समाज के पिछड़े, वंचित और दलित समाज के संघर्ष का इतिहास है। वह कश्यप, मल्लाह, बिंद, निषाद, बाथम, मांझी समाज की अस्मिता और सामाजिक न्याय की प्रतीक बन गई थी। समाजवादी पार्टी ने फूलन देवी जी को सांसद बनाकर कश्यप-निषाद समाज को उनका हक और सम्मान दिलाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया था।

समाजवादी पार्टी मुख्यालय लखनऊ में श्री रफीक अंसारी विधायक, पूर्व एमएलसी श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं श्री रामवृक्ष यादव, पूर्व प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री राज कुमार मिश्रा ने भी माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पूर्व सांसद फूलन देवी की पुण्यतिथि पर पार्टी कार्यालयों में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। फर्रुखाबाद समाजवादी पार्टी कार्यालय में पुण्यतिथि पर फूलन देवी जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित किया गया। इस अवसर पर डॉ राजपाल कश्यप पूर्व प्रदेश अध्यक्ष समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, पूर्व सांसद राजाराम पाल, डॉ जितेन्द्र यादव, सर्वेश अम्बेडकर, राजीव चतुर्वेदी, अरविन्द कश्यप, जहान सिंह लोधी, जंगाली लाल बाथम, उमेश यादव सहित अन्य प्रमुख लोगों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

चंद्रशेखर

आजीवन समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध

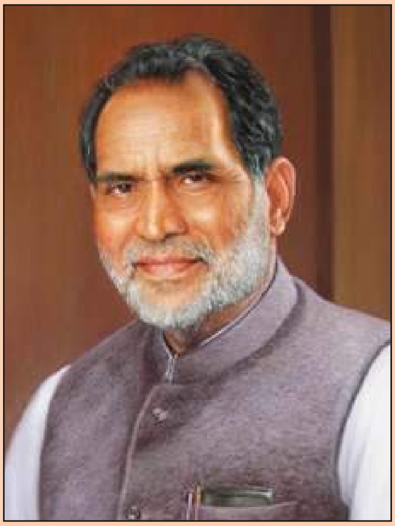

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने दिनांक 8 जुलाई को पूर्व प्रधानमंत्री जननायक श्री चन्द्रशेखर जी की पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि श्री चन्द्रशेखर जी ने सामाजिक गैरबराबरी के विरूद्ध जीवन भर संघर्ष करते रहे। आपातकाल के विरोध में जेल की यातना सही। 1977 में जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए। वह देश के ऐसे प्रधानमंत्री रहे जिनकी बात संसद से सड़क तक गम्भीरता से सुनी जाती थी।

श्री यादव ने कहा कि श्री चन्द्रशेखर जी लोकतांत्रिक समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध रहे। वे आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों से प्रभावित होकर समाजवादी आंदोलन में सक्रिय हुए।

सदैव प्रेरित करता है

रामशरण दास का समर्पण

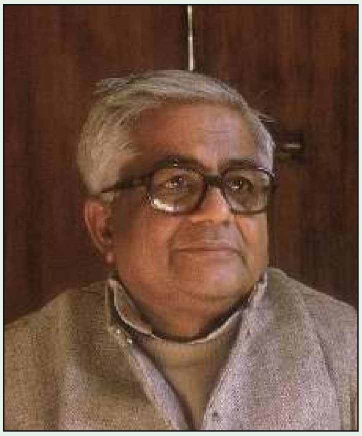

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने वरिष्ठ समाजवादी नेता एवं पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रहे स्वर्गीय रामशरण दास जी की दिनांक 3 जुलाई को जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि राम शरण दास जी समाजवादी आन्दोलन के लिए समर्पित पार्टी के निष्ठावान नेता थे। समाजवाद और पार्टी के प्रति उनका समर्पण हर नेता और कार्यकर्ता को प्रेरित करता है।

श्री राम शरण दास का समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पार्टी संगठन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। राम शरण दास जी जन आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। आपातकाल के दौरान उन्होंने जेल यातना सही थी। श्री मुलायम सिंह यादव के मंत्रिमण्डल में वे गन्ना मंत्री रहे थे।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh
Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आइए संविधान एवं लोकतंत्र की रक्षा के लिए समाजवादी पार्टी से जुड़िए और एक ऐसे भविष्य की ओर चलिए जिसमें समता, समानता और सौहार्द हो, जिसमें सबके लिए बराबर अवसर हों और बिना भेदभाव व भय के सबकी समान तरक़्क़ी हो!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज से आटा, दही, पनीर से लेकर ब्लेड, शार्पनर, एलईडी, इलाज, सफ़र सब पर GST की जो मार आम जनता पर पड़ी है उससे दुखी होकर GST का एक नया भाव-अर्थ सामने आया है... 'गयी सारी तनख़्वाह'

#GST_Gayi_Saari_Tankhvaah

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

लोक विश्वासों का अर्थ ये नहीं होता कि उन्हें किसी पर ज़बरदस्ती थोपा जाए।

Translate Tweet

बुज़ुर्ग को गोबर से नहलाया शिकायत की तो मारापीटा

बारिश के लिए टोटका करना बना विवाद का कारण

अमर उजाला ब्यूरो

बारिश के लिए अनोखा टोटका मेंढक-मेंढकी की कराई शादी

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Congratulation to young gun Devansh Saraf for this brilliant piece of work #XorY, that hopefully helps in further eradicating #genderdiscrimination

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ये हैं भाजपा के तथाकथित नवीनतम विकास के नवीनतम खंडहर! बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे की ये जो दरार है दरअसल ये भाजपा का भ्रष्टाचार है। जनता को नफ़रत की राजनीति में झोंक कर विकास के नाम पर आटे तक पर वसूले जा रहे पैसों से क्या ऐसा ही विकास होगा।

कारवाँ ठहर गया... वो सरकारें तोड़ते रहे...

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा के राज में यूपी पुलिस की रक्षा के लिए भी एक विशेष पुलिस बना दी जाए।

Translate Tweet

Agra : कोर्ट परिसर में पुलिस पर हमला, पेशी पर लाए गए गैंगस्टर को छुड़ा ले गए हमलावर

अमर उजाला ब्यूरो, आगरा Published by: मुकेश कुमार Updated Wed, 13 Jul 2022 03:11 PM IST

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भावभीनी श्रद्धांजलि।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जम्मू कश्मीर में गाँववालों ने लश्कर के जिन दो आतंकवादियों को पकड़ा है, उनमें से एक का संबंध लंबे समय तक भाजपा की IT CELL से होने की बात भाजपा के अल्पसंख्यक मोर्चे के अध्यक्ष ने स्वयं स्वीकार की है। उस आतंकवादी ने दो महीने पहले ही भाजपा छोड़ी थी।

इस मामले की गहन-गंभीर जाँच हो!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

रेवड़ी बाँटकर थैंक्यू का अभियान चलवाने वाले सत्ताधारी अगर युवाओं को रोज़गार दें तो वो 'दोषारोपण संस्कृति' से बच सकते हैं।

रेवड़ी शब्द असंसदीय तो नहीं?

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

समाजवादी पार्टी की पूर्व सांसद स्व. फूलन देवी जी की पुण्यतिथि पर शत शत नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जय श्री कृष्णा!

जन्माष्टमी के ठीक एक महीने पहले भाजपा सरकार ने दूध, दही, छाछ पर GST लगाकर जो चोट कृष्ण भक्तों को दी है, उससे आहत होकर हर एक भोला कृष्ण भक्त पूछ रहा है कि क्या अब दूध का जला, छाछ को भी... दूध का दूध...दूधो नहाओ...दही जमना जैसे लोकोक्ति-मुहावरों पर भी GST देना पड़ेगा?

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार और कुशासन की क्रॉनॉलॉजी समझिए:

- पहले लोक निर्माण विभाग के मंत्रालय में विद्रोह
- फिर स्वास्थ्य मंत्रालय में विद्रोह
- अब जल शक्ति मंत्रालय में विद्रोह

जनता पूछ रही है, उप्र की भाजपा सरकार ईमानदारी से बताए... अब अगली बारी किसकी है?

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 52 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

दूध, दही और आटा पर भी GST लगाई
भाजपा राज में हाय रे मार डाले महंगाई

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty

www.samajwadiparty.in